

कैनेडा से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका

Year 18, Issue 71
July-Sept., 2021

वसुधा

VASUDHA A CANADIAN PUBLICATION

FOUNDER-EDITOR-PUBLISHER : Dr. SNEH THAKORE
AWARDED BY THE PRESIDENT OF INDIA



संस्थापक-सम्पादक-प्रकाशक

डॉ. स्नेह ठाकुर

भारत के राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत

वर्ष १८ - अंक ७१, जुलाई-सितम्बर २०२१

शब्दभेदी बाण

पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि

शब्दवेधी बाण उनके पी लिए

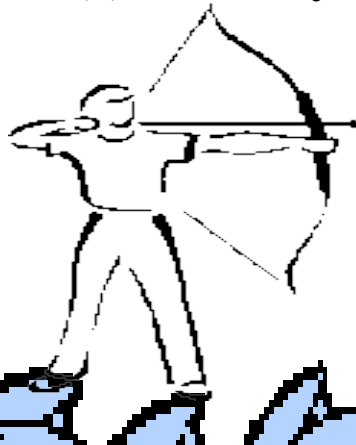
प्राण देकर हम दुबारा जी लिए

किन्तु अपनों के ज़हर के तीर से

शब्द ने बीधा हमें कुछ इस क्रूर

बिच्छुओं के डंक खाकर संत-से

जी रहे हर साँस पर झरते हुए.



वसुधा

संस्थापक, सम्पादक व प्रकाशक : डॉ. स्नेह ठाकुर

(पोस्ट-डॉक्टरल फ़ेलोशिप अवार्डी)

(भारत के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में "हिन्दी सेवी सम्मान" से सम्मानित)

शीर्षक	रचयिता	पृष्ठ
सम्पादकीय		२
कलियुग का भगवान	वीरेन्द्र कुमार यादव	७
गीता सार	अविनाश कुमार	९
काठ की हांडी	डॉ. हंसा दीप	११
केसर प्रेम	डॉ. आशीष कंधवे	१४
तीन बिंदी एक महिला	मदन लाल गुप्ता	१६
उदण्ड	रंजीता	१७
मातृभूमि ने तुम्हें पुकारा	विजय कुमार यादव	१८
प्रतिक्रिया	इंदु कान्त आंगिरस	१९
अगर जीवित हो	डॉ. अलका अग्रवाल	२०
ठंडे रिश्ते	डॉ. बीना बुदकी	२१
"कोविड" यह तुम आज सुनो	डॉ. दीपक घोष	२३
उम्मीद	उमेश पंसारी	२४
पता नहीं	मोती लाल दास	२५
भारतीय साहित्य और		
उसकी वैश्विक प्रतिष्ठा	डॉ. विमलेश कांति वर्मा	२७
शबरी राम मिलन	डॉ. नूतन पाण्डेय	३१
कोरोना काल में		
हिंदी साहित्य की प्रासंगिकता	डॉ. साधना गुप्ता	३४
ख्वाहिश	रचना मिश्रा	३६
हमें यहाँ से देखो	डॉ. मुक्ता	३७
शब्द-भेदी बाण	पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि	१ अ
डॉ. स्नेह ठाकुर का रचना संसार		४४ अ

रचनाओं में निहित विचार तथा मन्तव्य रचनाकारों के निजी विचार तथा मन्तव्य हैं। 'वसुधा' रचनाकारों के विचारों के लिए उत्तरदायी नहीं है। प्रकाशक की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाएगा। रचनाएँ भेजने के लिए सम्पर्क पता :

16 Revlis Crescent, Toronto, Ontario M1V-1E9, Canada. TEL. 416-291-9534

वार्षिक शुल्क Annual subscription.....\$25.00, भारत - रु. ६००.००

डाक द्वारा By Mail \$35.00, International Mail \$40.00

Website: <http://www.Vasudha1.webs.com>, kavitakosh.org/vasudhapatrika

E-mail: dr.snehthakore@gmail.com

सम्पादकीय

“आज़ादी का अमृत महोत्सव” हेतु सन्देश

टोरंटो कनेडा से मैं, हिंदी साहित्यकार एवं संस्थापक-सम्पादक-प्रकाशक “वसुधा” साहित्यिक पत्रिका, डॉ. स्नेह ठाकुर, पचास वर्षों से प्रवासी भारतीय, एवं “एन.आर.आई.” योजना के आरम्भ से “एन.आर.आई”, स्वयं अपनी ओर से एवं प्रवासी भारतीयों की ओर से भी “आज़ादी का अमृत महोत्सव” पर सभी भारतीय भाई-बहनों को बधाई एवं शुभ-कामनाएँ दे रही हूँ. यह आज़ादी हमारी अमूल्य निधि है, जिसे हमारे पूर्वजों ने अपना बलिदान देकर हमें सौंपी है. इसकी सुरक्षा का भार, इसकी गरिमा बनाए रखना हर भारतीय एवं प्रवासी भारतीय का कर्तव्य है. भारतीयों का यह दायित्व तो बनता ही है पर साथ ही भारत में जन्में प्रवासी भारतीयों का भी यह दायित्व बनता है क्योंकि भारत ने ही उन्हें इस योग्य बनाया कि वे विदेशों में सर उठा गर्व से रह सकें; अतः उन्हें भी अपने भारतीय भाई-बहनों के साथ मिलकर, अपने भारत की आन-बान-शान का ध्वज ऊपर उठाकर उसका मान बढ़ाना है. साथ ही प्रवासी भारतीयों का यह भी दायित्व बनता है कि वे अपनी संतानों को जहाँ जिस देश के वे वासी हैं, उसका सम्मान करना तो सिखाएँ ही सिखाएँ, पर साथ ही उन्हें उनके पूर्वजों के इतिहास से भी परिचित करा उसका भी सम्मान करना सिखाएँ; उन्हें अपने भूत और वर्तमान से शिक्षा ले भविष्य को मंगलमय बनाने का गुरुमंत्र दें –

पंद्रह अगस्त आज़ादी का दिन हमारा
पूर्वजों के बलिदानों से पाया
शब्दों को लड़ियों में पिरोओ, भावों का विस्तार करो
कुचक्रों का निडर हो सामना, तुम हर बार करो.

भरा पड़ा है इतिहास हमारा वीर प्रतापों से
राणा प्रताप, वीर छत्रपति शिवा जी
रण-बाँकुरी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई
पुरुषों का शौर्य, वन लहू बहता हमारी रगों में
रख लाज उनकी, प्रगति की ओर बढ़ें कदम हमारे
उठा लें हम आज ये वीड़ा उठाकर ध्वज तिरंगा प्यारा
आज हैं हम जितने खड़े उनमें औरों को भी मिलाते चलें
भारत एवं भारतीय-संस्कृति की गरिमा दिखाते हुए
संस्कारी भारतीयों का घेरा बढ़ाते चलें
भारत माँ को गौरव-सुमन अर्पित करते चलें
बढ़े चलें, बढ़े चलें.

नहीं है भारत केवल मानचित्र पर अंकित त्रिभुज-सा
भारत तो है निगुहताओं का चिरज्ञानी, वेदों का ज्ञाता

न केवल अपने देश का, है तू शील भूमण्डल का
है भारत तेरा स्वर ब्रह्म-नाद उठाने वाला.

नहीं है भारत तू पर्याय मात्र स्थान का
तू है मानव की गुण विशेष परिभाषा
मानवता का दीप लिए हर मानव है तेरा
करूँ नमन मैं ऐसे श्रेष्ठ ललाट का.

भारत जैसे गौरवशाली अनमोल रत्न
नहीं हैं विश्व में अनेक
गर्व से मस्तक ऊँचा उठा लो
भारत का गौरव बढ़ाते चलो
बढ़े चलो, बढ़े चलो.

है दम लोगों की एकता में
न समझो मामूली भीड़ इसे
समाज की रीढ़ है यह भीड़ ही
करेगी जिसे मुखर साहित्यकार की वाणी
मिलकर दोनों बनाएँगी इतिहास गौरवशाली
एकाग्रता से जुटे रहो
भारत माँ का गौरव बढ़ाते चलो
संस्कारी-सुमन अर्पित करते चलो
बढ़े चलो, बढ़े चलो.

ऐ भारत! तुझ बिन मैं नहीं और तू तू नहीं
कुछ मैं तुझमें और कुछ तू मुझमें
स्वयं में पूर्ण दोनों नहीं
दोनों इकाई सिमटी समग्र में.

संघर्ष जिंदगी का सार है
सफलता की सीढ़ी है
कुछ भी नहीं काबिले-हासिल
गर चुनौतियों के चक्रव्यूह से न निकले जीवन.

हीरा बिन तराशे चमकता नहीं
पॉलिश रत्न की बिन रगड़ होती नहीं
सोना बिन अग्नि निखरता नहीं



बिन धुनें कपास रुई बनती नहीं
इन्सान भी तब-तलक रहता है अधूरा आदमी
जब तलक वह संघर्षों के दौर से गुजरता नहीं.

मेरा देश
आज दो नामों में बँट गया है
भारत और इण्डिया
भारत पूर्वीय दैवीय गुणाच्छादित सभ्यता का प्रतीक
और इंडिया पाश्चात्य सभ्यता का.
भारत की सात्विक संस्कृति की छाती पर
इण्डिया की तामसिक वृत्ति
चढ़ कर बैठ गई है
और उसे सौतेले भाई की भाँति
चौखट से बाहर निष्कासित कर रही है.

भारतीय साहित्य, संस्कृति दम तोड़ रही है
और पश्चिमीय सभ्यता जोरों से पनप रही है.

लोक गीत, नृत्य, कला
अपने ही घर में सर झुका
लज्जित-से कोने में खड़े हैं
और इण्डिया के पाँव
पाश्चात्य धुन पर थिरक रहे हैं.

भारतीय इंडियन बन
अपनी मातृभाषा को परे धकेल
पराई भाषा में
उधार मिली संस्कृति में
सुखानुभूति अनुभव करता है
यह कैसी विडम्बना है?

जो देश था हर गौरव से भरपूर
वही उन सब को तुच्छ मान
नकली हीरों की चमक से प्रभावित
गलत सिद्धांतों की बैसाखियाँ लगाकर
भौतिकता की अंधाधुंध दौड़ में शामिल
बदहवास भागता जा रहा है.

काश! भारत स्वयं के नाम से ही जाना जाता
उसका अँग्रेजी अपभ्रंश रूपांतरण न होता
भारत भारत ही रहता इण्डिया न बनता.

काश! आज भी भारत जाग जाए
अपना मूल्य पहचाने
संकट के कगार पर खड़ा भारत
अतीत के असंख्य अनमोल रत्नों की
धूल झाड़-पोंछ कर
उन्हें चमका-चमका कर
अपने बूते पर
विश्व में अपना तिरंगा फहराए.

साहित्य और कला करते हैं प्रस्तुत
न केवल वास्तविकता
चढ़ कल्पना के अश्व पर
धुंधलके के पार जा
अदृश्य को यथार्थ में बदलने की
है क्षमता इनकी.

जागो दूरदेशीय जागो
भारत माँ का आह्वान सुनो
नहीं लो बहाने मात्र का सहारा
कि अब तो है हमारी माता कनाडा
जब तुम अपनी सगी माँ के ही न बन सके
तो क्या बनोगे विमाता का सहारा
जागो दूर देशीय जागो.

अपने प्रिय भारत के लिए
सभी सहृदय भारतीय, प्रवासी-भारतीयों से
अनुरोध है कि वे सद्भावना से ओत-प्रोत
नरों के इन्द्र, नरेंद्र मोदी जी के आह्वान की डोर पकड़
वसुधा पर भारत का वर्चस्व बढ़ाने का संकल्प दोहराएँ.

बँधे कर्तव्य से
सर ऊँचा उठा गर्व से

सुखद भविष्य का निर्माण करें
भारत का सम्मान करें.

हम करें भारतीय-संस्कृति का स्वागत
हम करें भारतीय-संस्कारों का आराधन
आज हैं हम जितने यहाँ
उनमें औरों को मिलाते चलो
संस्कारी भारतीयों का घेरा बढ़ाते चलो
बढ़े चलो, बढ़े चलो.

भारत है महान्
सभ्यता संस्कृति की पहचान
देववाणी से जुड़ी
गुणों की खान
भारत महान्.

भरपूर संस्कारों का स्वामी
गहन अर्थ सम्पदा धारी
जन-जन का कण्ठहार
भारत महान्.


साहित्य समृद्ध सरिता इसकी
विश्व में अविरल बहती
आनंदित करता मधुर निनाद
भारत महान्.

भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी को हार्दिक धन्यवाद देना चाहूँगी कि उन्होंने विदेशों में भारत की जो प्रशंसनीय छवि बनाई है, एवं भारत की भाषा हिंदी में अपने भाषण देकर भारतीयता का, भारतीय संस्कृति का, जो मान बढ़ाया है, वह अतुलनीय है, प्रशंसनीय है.

वन्दे मातरम.

सस्नेह, स्नेह ठाकुर





कलियुग का भगवान

वीरेन्द्र कुमार यादव

(सदस्य हिंदी सलाहकार समिति, भारत सरकार,
सह-अध्यक्ष अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी परिषद्)

कृषक तुम्हारे हर कुदाल में
नवयुग का निर्माण छुपा है
शांति छिपी तेरी कुटिया में
क्रांति छिपी तेरी कुटिया में,
पर न देख सकता है कोई
जग के चहल-पहल में
कृषक तुम्हारी ही चाहतों में
युग-युग का अरमान छिपा है.

तेरी आँखों में आँसू हैं
उदर बीच जठनारल
युग-युग से जो रहा जलाता
तुमको तिल-तिल, पल-पल
कृषक तुम्हारी ही आहटों में
विकल विश्व का प्राण छिपा है.

अणु उदजन बम में शक्ति अगर
तांडव का नाच नचाने की
तो कृषक हाथ में है ताकत
उजड़े संसार बसाने की
कृषक तुम्हारे ही हाथों में
सकल विश्व का कल्याण छिपा है.



तुझमें शक्ति छिपी इतनी
जैसे बादल में गर्जन
तेरे ही इंगित पर होता
जग के सब परिवर्तन
कृषक तुम्हारी ही मेहनत पर
जग का शान गुमान छिपा है.

तेरे निज डर के गहवर में
छिपा बहुत जो क्रंदन
नहीं तोड़ क्या वह सकता
जग के सारे बंधन?
कृषक तुम्हारे त्याग शौर्य पर
जगती का जन मान छिपा है.

शोणित अपना बहा पसीना
राष्ट्र हेतु तुम मरते
युग-युग से तू रहा उपेक्षित
पर आह नहीं भरते
कृषक तुम्हारे दीन वेश में
कलियुग का भगवान छिपा है.



गीता सार - अध्याय ०३ – कर्म योग

अविनाश कुमार

इस अध्याय में कृष्ण अर्जुन को कर्मयोग का महत्व बताते हैं। वे राग, द्वेष और काम, क्रोध जैसे शत्रुओं से अवगत कराते हैं और इंद्रिय निग्रह के उपाय बताते हैं। वे कहते हैं कि कर्म से तो मनुष्य जीव संसार में जन्म लेते ही बँध जाता है, किन्तु जीव को स्वयं को कर्म के फल से पृथक रखकर कर्म करते रहना चाहिए।

कृष्ण -

भगवन बोले, दो प्रकार की, निष्ठा मैंने बताई,
ज्ञान से मिलता सांख्ययोग, देता कर्म भलाई (०३)

कर्मों को आरम्भ करे बिन, योगनिष्ठा न पाए
जो कर्मों का त्याग करे, न संख्य-योगी बन पाये (०४)

कोई, किसी भी काल में, न बिना कर्म जी पाए,
मनुज जन्म के होते ही, कर्म जाल बँध जाये (०५)

कर्म से जन्मे यज्ञ है पावन, यज्ञ जन्मते वृष्टि
वृष्टि जन्मे अन्न समूचा, अन्न से जन्मे सृष्टि (१४)

कर्म-यज्ञ-वृष्टि-अन्न-सृष्टि, चक्र को जो झुठलाये
ऐसा भोगी विलासी मानव, जीवन व्यर्थ बिताये (१६)

श्री कृष्ण कहते हैं कि कर्म से तो वे स्वयं भी मुक्त नहीं हो पाये हैं, और धर्म की रक्षा हेतु, अर्जुन को साधन बनाकर उसको उपदेश देने का सात्विक कर्म कर रहे हैं, जिससे धर्म की रक्षा हो सके।

न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किञ्चन ।

नानवासमवासव्यं वर्त एव च कर्मणि ॥

मुझे देख, तीनो लोकों में, कुछ भी नहीं अप्राप्त
फिर भी कर्म है बाँधे मुझको, नहीं कोई अपवाद (२२)

यदि किञ्चित मैं एक पलक भी, करम का छोड़ूँ हाथ
लाखों भजते नाम जो मेरा, गिरे पतन के साथ (२३)

अध्याय ०४ – ज्ञान योग

इस अध्याय में भगवान कर्म-अकर्म-निकर्म की परिभाषा देते हैं, निष्काम कर्म के उपाय बताते हैं और तत्व ज्ञान की श्रेष्ठता का बखान करते हैं। प्रभु कहते हैं कि कर्म तो आवश्यक है, किन्तु अज्ञान वश किया कर्म, उसके फल से वंचित कर देता है। ज्ञान तो वह गठरी है जो कुकर्म और निकर्म के पापों को भी हर लेता है।

कृष्ण

कर्म-योग की गाथा मैं सदियों से कहता आया
सूर्य-मनु-ईश्वराकु द्वारा, ज्ञान यह बहता आया (०१)

तुम हो मेरे मित्र, सखा, और इसके पालन योग्य
इसलिए है तुम्हें बताया, यह उत्तम रहस्य औ' योग (०३)

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

जब-जब धर्म की हानि होती, अधर्म का हो विस्तार
तब-तब मैं कल्याण के हेतु, लेता हूँ अवतार (०७)

सज्जन की रक्षा करूँ - दुर्जन को देता फूँक
धर्म पुनर्स्थापित करूँ, युग-युग ले कर रूप (०८)

कर्म-अकर्म के बीच का अन्तर, जान न पाया ज्ञानी
इसका भेद बताता हूँ सुन, न कर तू नादानी (१६)

जिसने नष्ट किया ममता, आसक्ति, व अभिमान को
यज्ञ की भाँति कर्म करे जो, पाए वो भगवान को (२३)

कर्म योगी फूँके इच्छा को, निज संयम की अग्नि में
अज्ञानी तो लोभ ही बरता, इंद्रियों की जननी में (२६)

हे अर्जुन! तू ज्ञान शस्त्र से, मोह का कर दे छेदन
कर्म योगी बन, और जीते रण, यूँ बोले मधुसूदन (४२)

अध्याय ०५- कर्म सन्यास योग - इस अध्याय में प्रभु कर्म सन्यासी का विस्तार से वर्णन करते हैं। श्री कृष्ण कहते हैं कि कर्म का त्याग करके कोई सन्यासी नहीं बन सकता है। परम सन्यासी तो वह है, जो अपनी इंद्रियों को वश मे करके, अपना कर्म करता चला जाए।

कर्म - अकर्म दोनों से ही, जाता स्वर्ग का द्वार
कर्म न करने से बेहतर, कर्म करना है स्वीकार्य (०२)

मन को जीते, तन को जीते, वह जीते संसार
स्थित प्रज्ञ मानव के ऊपर, कृपा हरी अपार (१९)

प्रिय प्राप्त न हर्षित हो, अप्रिय प्राप्त न शोक
वह स्थिरबुद्धि ही हरी प्यारा, भोगे सुख त्रिलोक (२०)

अध्याय ०६ - आत्म संयम योग - इस अध्याय में श्री कृष्ण योगी की पहचान बताते हैं। वे ध्यान और वैराग्य द्वारा मन को जीतने के उपाय बताते हैं। वे योगियों और योग भ्रष्ट मनुष्यों की गति का वर्णन भी करते हैं।

कृष्ण - न अग्नि तज के सन्यासी, न कर्म त्याग के योगी,
जो तजे कर्म फल सन्यासी, वही है सच्चा योगी (०१)

यदि जीता है इच्छाओं को, तो है स्वयं का मित्र
यदि जीता है इच्छाओं ने, तो बना स्वयं का शत्रु (०६)

हे अर्जुन, जो अधिक न बरते, अधिक न खाए भोजन,
अधिक न सोवे, अधिक न जागे, करे योग ये धारण (१६)

हे अर्जुन! जो सुख और दुःख में, रहे एक समान
वही परम योगी है मानव, पाए श्रेष्ठ स्थान (३२)

अर्जुन - चंचल है, उदंड है, मन होए बड़ा बलवान
बाँधे न बँध पाए जी है, वायु मुक्त समान (३४)

कृष्ण - मन है, चंचल शिशु के जैसा, न बँधे किसी भी पाश
किन्तु वश में हो सकता है, नित योग और अभ्यास (३५)

पूर्व जनम की सिद्धि उसके देती उत्तम स्थान
पुनः प्रयत्न करे वह योगी, पा जाये भगवान् (४३)

काठ की हांडी

(कमलेश्वर स्मृति कथा पुरस्कार २०२०)

डॉ. हंसा दीप

अफरा-तफरी मची हुई थी। शहर के हर कोने से भय और घबराहट की गूँज सुनायी दे रही थी। एक से दूसरे, दूसरे से तीसरे तक पहुँचते कोरोना वायरस अब एलेगेंडर नर्सिंग होम की दहलीज पर कदम रख चुका था जहाँ कई उम्रदराज़ पहले से ही बिस्तर पर थे। सीनियर सिटीज़न के इस केयर होम में अधिकांश रहवासी पचहत्तर वर्ष से अधिक की उम्र के थे। कई लोग आराम से घूम-फिर सकते थे तो कई बिस्तर पर ही रहते। कई को अपनी दिनचर्या निपटाने में किसी की मदद की आवश्यकता नहीं होती तो कई पूरी तरह से मदद पर निर्भर थे। कई शारीरिक व मानसिक दोनों रूप से अस्वस्थ थे, तो कई सिर्फ मानसिक रूप से अस्वस्थ थे। वे चलते-फिरते तो थे पर ऐसे जैसे कि कोई जान नहीं हो उनमें। उन्हें देखकर लगता था कि जिंदगी टूट-फूट गयी है, जैसे-तैसे उसे समेट कर चल तो रहे हैं पर किसी भी क्षण बिखर सकती है।

कोरोना के प्रहार को सहने की ताकत इन सीनियर सिटीज़न में बहुत कम थी इसीलिये यह वायरस इसका फायदा उठाकर शहर के अधिकांश ऐसे नर्सिंग होम को निशाना बना रहा था। अब तक सुरक्षित रहा यह केयर होम अब इसके शिकंजे में फँस चुका था। एक के बाद एक कई लोगों की रिपोर्ट पॉज़िटिव आ रही थी और उन्हें अस्पताल भेजा जा रहा था। चौबीस घंटे खत्म होते-होते दस लोगों की मौत की खबर उनके साथियों में निराशा और दहशत फैलाते हुए दीवारों से टकराकर साँय-साँय कर रही थी। मौत का मंजर आँखों के करीब आकर दस्तक दे रहा था।

खौफ़ और खतरों से जूझते यहाँ के कर्मि अपनी जान की चिंता लिये जैसे-तैसे इस खतरे से निपट रहे थे। कुछ पॉज़िटिव होने से घर पर एकांतवास में थे, कुछ इसकी आशंका में घर रुकना चाहते थे पर मजबूरी में काम कर रहे थे। एक के बाद एक आती इन खबरों ने रोज़ा को विचलित किया था। बेसब्री से प्रतीक्षा कर रही थी कि अपने पड़ोसी स्टीव की कोई खबर मिल जाए उसे।

जीवन के छियासी बसंत पार कर चुकी रोज़ा पर मौत की खबरों का आतंक इस तरह छाया था कि नज़रें टीवी स्क्रीन से हट नहीं रही थीं। गत दस वर्षों से यही नर्सिंग होम उसका घर था। पिछले कुछ दिनों से सारे कर्मि इस तरह डरे हुए अपना काम कर रहे थे मानो बिस्तर पर लेटे ये रहवासी मौत का पैगाम लिये खड़े हों उनके लिये। सबने अपने आपको पूरी तरह कवर किया हुआ था, पता ही नहीं चलता कि “यह है कौन”। आज तक कभी ऐसी स्थिति नहीं आयी थी कि काम करने वाले उन सबके इर्द-गिर्द किसी रोबाट की तरह आएँ। हल्के नीले रंग के प्लास्टिक के कवर से ढँके या यों कहें कि प्लास्टिक का गाउन पहने हुए, हाथों में दास्ताने, मुँह पर मास्क, पारदर्शी चश्मे में छिपी आँखों के सिवाय कुछ दिखाई नहीं देता था।

सूज़न, नर्सिंग होम की रिसेप्टनिस्ट ने आकर आज दिवंगत हुए सदस्यों के नाम बताये। स्टीव का नाम भी था उनमें। रोज़ा की आँखें जैसे झपकना ही भूल गयी हों। कई साथियों के साथ उसका खास दोस्त स्टीव उसे छोड़ कर चला गया था। अक्सर वे दोनों आपस में बातें करते रहते थे। दोनों ने यहाँ के जीवन को खुशी-खुशी स्वीकार कर लिया था। किसी को अब परिवार, बच्चों की प्रतीक्षा नहीं होती क्योंकि वे दोनों एक दूसरे के अच्छे साथी बन गये थे। उस बड़े कमरे में जहाँ चार लोगों के पलंग थे। एक ओर से दूसरी ओर सिर्फ कपड़े का परदा था जो उनके अपने कमरे की सीमा था, उनका अपना घर था। कोई किसी की चारदीवारी में नहीं झाँकता था। बैठे-बैठे, सोए-सोए बातें कर लेते थे, ठाहके लगा लेते थे, लंच-डिनर की टेबल पर साथ निभाते और टहलने साथ में चले जाते थे।

कल स्टीव की रिपोर्ट कोरोना पॉज़िटिव आयी और उसे अस्पताल ले जाया गया था, आज वह चल बसा था। बगैर कुछ कहे इस तरह उसका चले जाना मन को स्वीकार ही नहीं हो रहा था। लग रहा था कि अभी कपड़े की दीवार के उस पार से आवाज आएगी – “हे, रोज़, सब ठीक है? चलो, घूमने चलें।”

“पाँच मिनट बाद चलते हैं स्टीव।”

उन पाँच मिनटों में वह अपने बाल ठीक करेगी, रूखे होठों पर चॉपस्टिक लगाएगी और चप्पल पहन कर चल देगी उसके साथ। नीचे बरामदे तक जाएँगे। फिर मौसम अच्छा होगा तो थोड़ा बाहर निकलेंगे, उसके बाद उसकी मजेदार बातों पर हँसते हुए ताश खेलने बैठेंगे। अखबार पढ़ेंगे और फिर से अपने-अपने कमरे में कैद हो जाएँगे।

इस तरह तो कोई दुनिया छोड़ कर चला नहीं जाता। रोज़ा के लिये यह सिर्फ एकाकीपन ही नहीं था, बहुत कुछ था जो तकलीफ़ दे रहा था। साथ वाले परदे की हिलती दीवारों को घूरते हुए महसूस हो रहा था कि न जाने कल किसका नम्बर है। कितने और लोग अस्पताल के लिये ही नहीं, अपनी आखिरी यात्रा के लिये प्रस्थान कर रहे हों। वही हुआ, अगली सुबह तक लगभग सारे लोग या तो जा चुके थे या बची हुई अपनी चंद साँसें गिन रहे थे।

शायद जीवन का सबसे दुखद दिन था यह, जब आसपास के सारे जाने-पहचाने चेहरे कूच कर गए थे। रोज़ा न खा पायी थी, न सो पायी थी। वह रात काटे नहीं कट रही थी। बहुत अँधेरी थी, इतनी अँधेरी कि लग रहा था आज सूरज नहीं उगेगा। उसे भी महसूस होने लगा था कि कुछ गलत है शरीर में, साँस लेने में तकलीफ़ होने लगी थी। अजीब किस्म की बेचैनी थी। तमाम सामाजिक दूरियों के बावजूद सूरज निकलने तक रोज़ा के शरीर में कोरोना के सारे लक्षण मौजूद थे। उसे भी अस्पताल भेज दिया गया। कई मित्रों के हँसते हुए चेहरों से भरा वह नर्सिंग होम मौत का अड्डा बन चुका था। वे पलंग जो दिन हो या रात मदद की गुहार लगाते रहते थे, अब मौन थे। एक साथ पैंतीस लोगों की मौत अब छत्तीस का आँकड़ा पूरा करने के इंतज़ार में थी।

इस महामारी में अस्पताल जाना तो बीमार को और बीमार ही करता। वह जो देख रही थी, आँखें उसे कभी देखना नहीं चाहतीं। बाहर की लॉबी में कहीं उल्टी करने की तो कहीं थूकने की आवाज़ें आ रही थीं। चार-पाँच घंटों का इंतज़ार साइन-इन करने के लिये था। कुछ दीवार का सहारा लेकर खड़े थे, कुछ फर्श पर ही लेट गए थे। अगले चार-पाँच घंटों का इंतज़ार कॉरीडोर में पलंग के लिये था। रूम तो खाली थे नहीं, सारी खाली जगहें, चाहे वह डॉक्टरों के बैठने की हो या नर्सों के बैठने की, मरीजों के वार्ड में तबदील हो गयी थीं।

खत्म होते संसाधनों के साथ अस्पताल प्रशासक एक साथ कई मोर्चों से निपटते मरीजों के क्रोध से भी निपट रहे थे। गुस्से में एक मरीज ने नजदीक से गुजरते एक डॉक्टर का मास्क खींच लिया था; यह कहते हुए कि – “हम बीमार हैं तो तुम भी साथ में बीमार हो जाओ ताकि हम मरेंगे तो साथ में मरेंगे।”

डॉक्टरों, नर्सों की सुरक्षा के साथ, घबराहट व निराशा में धकेले गए इन रोगियों के आक्रोश को मुस्तैदी से रोकना भी एक ज़्यादा ज़रूरी काम हो गया था। जान बचाने वाले उन फरिश्तों को गालियाँ दी जा रही थीं। एक ओर मानवीयता अपना क्रूरतम रूप दिखा रही थी तो दूसरी ओर उदात्त मानवीयता के चरम की परीक्षा थी, लाशों को उठाने के लिये भी लोग नहीं मिल रहे थे। जीवित लोग इलाज की प्रतीक्षा कर रहे थे व लाशों का ढेर अस्पताल के प्रांगण में पड़ा अपने गंतव्य तक जाने की प्रतीक्षा कर रहा था। पहले दिन के प्रकोप के बाद अस्पताल के वैन से लाशें जा रही थीं। फिर वैन छोटे पड़ने लगे। बड़े कार्गो ट्रक बुलवाए गए। यह भी बहुत मुश्किल हो रहा था। अस्पताल इमारत की हर मंजिल से ट्रक तक पहुँचती लाशों को अस्पताल के कई दरवाजों से निकलना पड़ रहा था, इससे ले जाने वालों के लिये, रास्ते के मरीजों के लिये, सबके लिये खतरा था। अब खुले कार्गो ट्रक इस तरह खड़े किए गए कि प्लास्टिक में लपेट कर, हर मंजिल की बालकनी से ऊपर से नीचे सीधे लाश को ट्रक में

डाला जा सके। यह किसी भी तरह से मानवता का तिरस्कार नहीं था, यह तो ज़िन्दा बचे शेष लोगों को बचाने की कोशिश भर थी, जिंदा लोगों को सम्मान देने का एक प्रयास भर था।

घंटों इधर से उधर धकेले जाने के बाद रोज़ा को कॉरीडोर में रखा गया था। कमरों की कमी, बिस्तरों की कमी, मास्क की कमी, संसाधनों की कमी, सबसे ज्यादा वेंटिलेटर्स की कमी। अनगिनत आवश्यक वस्तुओं की कमियों के चलते हर चेहरा परेशान था, काम के बोझ से, मौत के खौफ से और मन के शोक से। सर्वसम्पन्न इंसान की सारी ताकतें इस वायरस ने झुठला दी थीं। ऐसा लगता जैसे इस बेबसी का मखौल उड़ाता कोरोना वायरस ठहाके लगा रहा हो।

रोज़ा का नम्बर आ गया था, पलंग मिलने के साथ ही कॉरीडोर में जगह मिलना इस बात का संकेत था कि अब इलाज जल्द ही चालू हो जाएगा। उसका बिस्तर आरामदेह था। हर बेड के बीच आवश्यक दूरी के बाद दूसरा बेड लगा था। सामने की कॉरीडोर की लाइन भी पूरी भरी थी। रोज़ा के ठीक सामने एक और मरीज अपनी बारी का इंतज़ार कर रहा था। बीच के रास्ते से नर्स, डॉक्टर आते-जाते मरीजों को संकेत दे देते कि बहुत कुछ चल रहा है वहाँ।

इस महामारी के चलते किसी भी परिवार वाले को साथ रखने की इजाजत तो थी ही नहीं। मरीजों के बीच घिरे स्वास्थ्यकर्मी मानों स्वयं मौत को अपने शरीर में घुसने का न्यौता दे रहे थे। दूरियों को निबाहते भी नजदीकियाँ तो थीं। ब्लड प्रेशर लेना, खून की जाँच करना, वेंटिलेटर लगाना, ये सारे काम बगैर छुए तो कर नहीं सकते थे। कहाँ जाते बेचारे, मरते क्या न करते! जीवन-भर के अपने कड़े परिश्रम के बदले उन्हें डॉक्टर का सम्माननीय पेशा मिला था। आज वे उससे भागना चाह रहे थे, अपने उस फैसले पर शायद पछता भी रहे हों। सारी काबिलियत को नकार कर आज उसी पेशे की वजह से मौत उनके पीछे पड़ी थी।

रोज़ा हैरान थी यह देखकर कि उसके ठीक सामने वाले पलंग पर एक नवयुवक था जो गम्भीर हालत में था। अभी तक तो वह यही सोच रही थी कि साठ के ऊपर की उम्र के लोग ही इससे परेशान हैं। यह नवयुवक तो अंदाज़न पञ्चीस-छब्बीस का होगा। रोज़ा को देख रही नर्स उसकी भी देखरेख कर रही थी। उसकी हालत गम्भीर थी। वेंटिलेटर्स कहीं खाली नहीं थे। डॉक्टरों की फुसफुसाहट ने तय किया कि इन दोनों मरीजों को बारी-बारी से वेंटिलेटर पर रखा जाए। ज़रूरत के हिसाब से कभी रोज़ा को, कभी डिरांग को।

पूरे दिन नर्स यही करती रही। उसकी झूटी बदलते ही दूसरी नर्स आयी। वह कह रही थी कि डिरांग की हालत ज्यादा खराब हो रही है। डॉक्टर को बुलाया गया। दोनों की फुसफुसाहट से सुनायी दे रहा था कि उसे ज्यादा समय के लिये वेंटिलेटर चाहिए वरना हम उसे बचा नहीं पाएँगे। हकीकत तो यह थी कि इस बार-बार के परिवर्तन से किसी को भी फायदा नहीं हो रहा था, रोज़ा और डिरांग दोनों ठीक होते-होते फिर साँस के मोहताज हो जाते। डॉक्टरों की पशोपेश समझ रही थी रोज़ा। अपने बिस्तर से वह डिरांग का चेहरा अच्छी तरह देख पा रही थी। बहुत मनमोहक नवयुवक था। सिर के घने-काले बाल और हल्की-सी दाढ़ी। चेहरा कुम्हलाया होने के बावजूद आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होने के सारे प्रमाण दे रहा था।

नर्स परेशान थी। इधर रोज़ा को राहत मिलती उधर डिरांग की बेचैनी बढ़ जाती। उसकी व्याकुलता रोज़ा को बहुत परेशान कर रही थी। दोनों की उम्र का बड़ा अंतर था। एकाएक उसे ख्याल आया कि – “मैं तो वैसे ही छियासी पार करने वाली हूँ, न कोई आगे, न पीछे। और जीकर करना भी क्या है मगर इस लड़के के सामने तो पूरी उम्र पड़ी हुई है।” पास से निकलने वाले एक डॉक्टर से उसने कहा – “सर, सुनिए, एक निवेदन है।”

“मिस रोज़ा हम समझते हैं आपकी तकलीफ़, जितना कर सकते हैं उतना कर रहे हैं।” उसे लगा कि शायद शिकायत के स्वर हैं ये।

“जी वही तो मैं भी कह रही हूँ। मुझे वेंटिलेटर की ज़रूरत अब नहीं है।”

“क्या मतलब?” वह एकाएक पलटा। चश्मे से बाहर आती आँखों ने न समझने का संकेत दिया।

“मैं ठीक हूँ। डिरांग को अधिक जरूरत है वेंटिलेटर की।”

“मिस रोज़ा, आप क्या कह रही हैं!”

“जी, मैं यही चाहती हूँ कि मुझे वेंटिलेटर लगाने के बजाय आप उसे ही लगा रहने दें। देखो, मैं तो वैसे भी अपनी उम्र से ज्यादा जी चुकी हूँ।”

डॉक्टर रोज़ा के चेहरे को पढ़ने की कोशिश कर रहा था।

उसे दुविधा में देख रोज़ा अपनी हकलाती आवाज पर जोर देकर कहने लगी – “मुझे इतना-सा कर्तव्य पूरा करने दें, उस नौजवान बच्चे को बचाने दें।”

हतप्रभ-सा डॉक्टर डिरांग को देखने लगा। उसके लिये दोनों की चिंता बराबर थी। उम्र, रंग, धर्म, जाति का भेदभाव किए बगैर जीवन रक्षा करना उन सबकी ड्यूटी थी। लेकिन रोज़ा के प्यार भरे, इंसानियत के आग्रह को स्वीकार करने में उसे कोई झिझक भी नहीं थी।

युवक की तबीयत बिगड़ती जा रही थी।

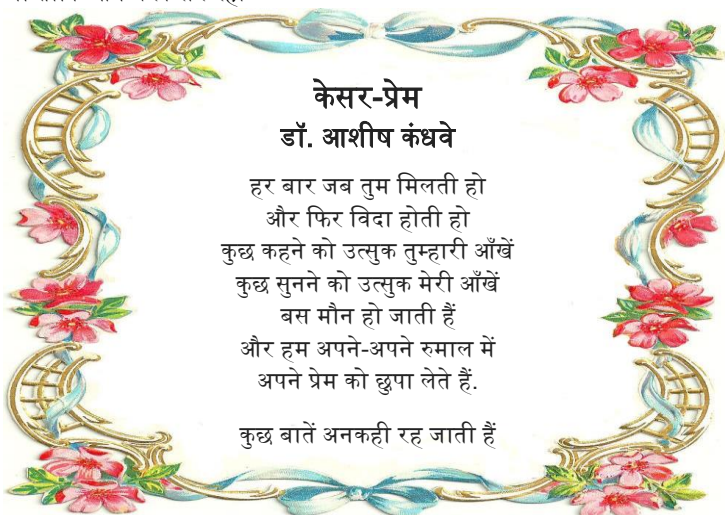
“जल्दी कीजिए उसकी जान बचाइए।”


न पेपर था, न हस्ताक्षर, न नौकरी की चिंता, अगर कोई चिंता थी तो वह थी एक जीवन बचाने की। बगैर किसी देरी के रोज़ा का समय भी डिरांग को दे दिया गया। एक ऐसा काम जिसके बारे में वह स्टीव को जरूर बताती, खैर, ऊपर जाकर बता देगी। वह भी खुश होकर कहेगा – “रोज़, तुम सचमुच रोज़ हो, जीवन की खुशबू फैलाती हो।”

यह सुनकर निश्चित रूप से रोज़ा के गाल लाल हो जाएँगे।

एक घंटे का समय बीत चुका था। आधी जगी, आधी सोयी वह स्टीव से बातें कर रही थी। डिरांग की आँखें धीरे-धीरे खुलने लगी थीं, रोज़ा की बंद होने लगी थीं। किन्तु उसके होठों पर मुस्कान थी क्योंकि सामने स्टीव खड़ा था, उसका हाथ पकड़ने के लिये। जीवन का लेन-देन हो गया था। मौत ने आमंत्रण स्वीकार कर लिया था। ऊपर वाली छत धुँधलाने लगी थी। पल भर में लिया गया फैसला सुकून की मौत दे गया था।

अपनी मृत्यु वरण करने का सुख हर किसी को नहीं मिलता, रोज़ा को मिला था। काठ की हाँडी स्वयं चूल्हे पर चढ़ गयी थी ताकि आग बरकरार रहे।





कुछ भावनाएँ अनछुई रह जाती हैं
छलछलाती आँखों से टपकती बूँदें
अनदेखी रह जाती हैं
और प्रेम सीढियाँ चढ़ने लगता है
ऊँचाई भरने लगता है.

मुझे यह नहीं जानना
इस महासृष्टि में मेरा अस्तित्व क्या है
मुझे तो बस तुम्हारी दृष्टि में
अपने अस्तित्व को तलाशना है
अनदिखे-अनजाने राह पर
प्रेम-दीपक जलाना है.

तुम्हारे पीले-पवित्र प्रेम-रंग में
मैं अपने प्रेम का केसर मिला देना चाहता हूँ
और कर देना चाहता हूँ
थोड़ा और गहरा
थोड़ा और पीला अपने प्रेम को.

मुझे मालूम है एक शीशे की दीवार
तुम्हारे-हमारे बीच खड़ी है
चाँद को पुकारने से कभी दूरी नहीं घटी है
लहरों को कूल से टकराकर मिट जाना है
फूल को भी खिल कर झड़ जाना है
तुम्हारे उपालम्भों के उत्तर में मौन रह जाना है
परंतु यह सारे प्रश्न हार-जीत के नहीं है
प्रेम प्रतीक के हैं, प्रेम रीत के हैं.

प्रेम की परिधि का कोई गणित नहीं होता
बिना परिक्रमा के प्रेम सिक्त नहीं होता
प्रेम आँखों से कभी रिक्त नहीं होता
बस कहने और सुनने की उत्सुकता बनी रहे
क्योंकि, जीवन के सभी रास्तों पर जय नहीं होता.

चलो अपने रुमाल में
अपने प्रेम को छुपा लेते हैं
साँझ ढलने को है आज फिर
एक प्रेम गीत गा लेते हैं।

तीन बिन्दी एक महिला

मदन लाल गुप्ता

पिता से परिवार में प्रतिपल राग है, पिता से ही माँ की बिन्दी और सुहाग है।

"बिन्दी" संस्कृत के बिंदू शब्द से निकली है, जिसका अर्थ है बूँद या कण। पूरे भारत में बोली जाने वाली कई भाषाओं और बोलियों के कारण बिन्दी को कई अन्य नामों से जाना जाता है, जिनमें कुमकुम, सिंदूर, टीप, टिकली और बोदू शामिल हैं। हिन्दू परम्परा के अनुसार सभी लोगों की एक तीसरी आंतरिक आँख होती है। बाहरी दुनिया को देखने के लिए दो भौतिक आँखों का उपयोग किया जाता है, जबकि तीसरी ईश्वर की ओर ध्यान केंद्रित करती है।

विशेष रूप से लाल रंग की बिन्दी महिला के विवाहित होने का शुभ संकेत करती है।

जैसे ही हिन्दू दुल्हन अपने पति के घर की दहलीज पर कदम रखती है, उसकी लाल बिन्दी समृद्धि की शुरुआत करती है और उसे परिवार के सबसे नए अभिभावक के रूप में स्थान प्रदान करती है। जैसे ही एक महिला विधवा हो जाती है तो वह अब शादी से ना जुड़े होने के कारण बिन्दी नहीं लगाती। लेकिन अगर कोई महिला बिन्दी के पीछे के प्रतीकवाद को नहीं जानती या इसके बारे में जानने की परवाह नहीं करती है तो उसके लिए इसे पहनने का कोई कारण नहीं है।

बिन्दी सिर्फ एक लाल बिंदु से अधिक है। आधुनिक समय में, हालाँकि, बिन्दी के प्रतीकवाद का अब सख्ती से पालन नहीं किया जाता है। किन्नरों द्वारा पहनी जाने पर अब बिन्दी का अनादर भी देखने को मिलता है। यह सांस्कृतिक विनियोग के प्रश्न को जन्म देता है, क्योंकि अब कई अविवाहित बॉलीवुड हस्तियों ने फैशन के रूप में बिन्दी लगाना शुरू कर दिया है। जबकि पारम्परिक संस्कृतियों वाली महिलाएँ इस अधिनियम की आलोचना करती हैं, वहीं कुछ अन्य लोग इसे भारतीय संस्कृति को अपनाने के प्रयास के रूप में देखते हैं।

बॉलीवुड अभिनेत्री कंगना ने एक बिन्दी वाली नासा की इंटरनेट बहनों पूजा और प्रतिमा रॉय की काफी तारीफ़ की है। ये दोनों हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियों से घिरी हुई दिखाई दे रही हैं 'क्वीन' स्टार ने लिखा: "जिस किसी के दिमाग में वैज्ञानिक झुकाव होगा, उसका झुकाव स्वाभाविक रूप से हिन्दू धर्म के प्रति होगा। यह बड़े गर्व की बात है कि नासा की प्रतिभाशाली वैज्ञानिक लड़कियाँ भी भारतीय परम्परा का आदर करती हैं। भारतीय कहावत है 'बिन्दी से एक महिला की सुंदरता १,००० गुना बढ़ जाती है।' जब एक भारतीय महिला अपने माथे को बिन्दी से सजाती है, तो वह एक परम्परा का पालन कर रही है जो कम से कम ५,००० साल पुरानी है। इस में कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि बिन्दी ने अंतरराष्ट्रीय फैशन की दुनिया में अपनी जगह बना ली है। वास्तव में विश्व स्तर पर, बिन्दी भारत के सबसे अच्छे मान्यता प्राप्त प्रतीकों में से एक है। अगर एक महिला बिन्दी लगाती है तो यह उसके बारे में क्या कहती है, क्या यह सिर्फ एक सजावट है या इसमें और भी कुछ है? भारतीय महिलाओं के लिए, एक विशेष अवसर के लिए तैयार होना बिन्दी के बिना अधूरा है।

कोरियाई महिला शादी के समय तीन बिंदियाँ लगाती है। प्रत्येक गाल पर एक-एक लाल बिन्दी और माथे पर भी एक लाल बिन्दी (कुल ३ बिन्दी) के साथ, दुल्हन मेहमानों की भीड़ में से धीरे-धीरे चलती है। वह शाही-नीली पारम्परिक कोरियाई पोशाक पहने दो बूढ़ी महिलाओं से घिरी होती है। उसका सिर झुका होता है, जिससे दर्शक उसकी जोकदुरी की प्रशंसा कर सकते हैं, जो छोटे गहनों से अलंकृत एक जटिल हेडड्रेस है। नम्रता पूर्वक, महिला अपने घुटनों के बल अपने होने वाले पति के सामने बैठ जाती है, देवताओं के प्रसाद से लदी एक मेज़ दोनों को अलग करती है। शादी समारोह के बाद दूल्हा घोड़े पर और दुल्हन एक अलंकृत पालकी में पीछे-पीछे सुसराल की ओर विदा होती है।



उद्दण्ड

रंजीता

उन्मुक्त है स्वच्छंद है
करता सदा प्रतिद्वंद है.

धिक्कार को है झेलता
प्राणी बना उद्दंड है.

उन नीतियों पर चल रहा
जिसमें सदा विध्वंस है.

उन रीतियों पर पल रहा
जिसमें बसा पाखंड है.

क्यों कूटनीति की जड़ों में
वक्त को उलझा रहा?

उल्लंघनों की आँधियों के
साथ बहता जा रहा!

लोलुपता की आग में
पुरुषार्थ को पिघला रहा.

धर्मान्धता की भ्रान्तियों के
बीच फँसता जा रहा.

तेरे हृदय में रेंगता जो
दर्प रूपी सर्प है;

वंशानुगत पलता रहा
प्रतिशोध रूपी गर्भ है.

आधार जीवन का तेरा
तेरे ही हाथों भंग है.

संकल्पित सम्मान अब
गिरता हुआ हिमखंड है.



मातृभूमि ने तुम्हें पुकारा

विजय कुमार यादव

क्षत-विक्षत है धरा तुम्हारा ।

मातृभूमि ने तुम्हें पुकारा ॥

है जग से न्यारा प्यारा ।

शीश हाजिर हो ये हमारा ॥

क्षत-विक्षत है धरा तुम्हारा ।

मातृभूमि ने तुम्हें पुकारा ।

दुश्मनों ने फिर ललकारा ।

कर ले जय हिंद जयकारा ॥

यह गलियाँ यह चौबारा ।

बच न पाए शत्रु दोबारा ॥

झुकना नहीं हमें है गवारा ।

चाहे खून के बड़े फवारा ॥

घृणा आपस का करो किनारा ।

बनो एक दूजे का सहारा ॥

है दुश्मन देश यह आवारा ।

अब कि करो प्रहार करारा ॥

पल में बदल जाए नजारा ।

गाए विजय गीत बंजारा ॥

प्रतिक्रिया

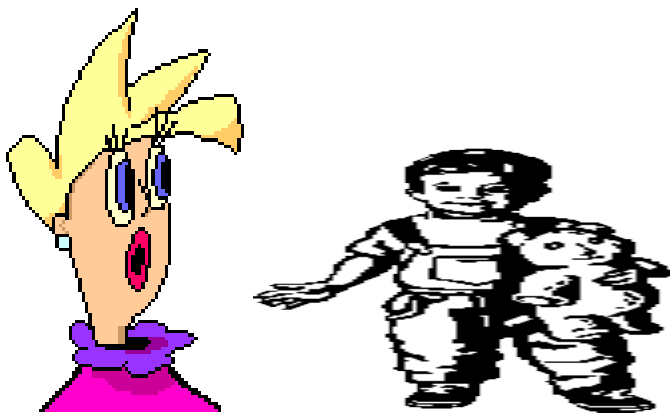
इन्दुकांत आंगिरस

गौरी नाम है मेरी बिटिया का, खिलौनों में सबसे प्रिय उसे अपनी रबड़ की गुड़िया ही लगती है। वह अपनी गुड़िया से बातें करती, उसे दुलारती तो कभी उसे पुचकारती। उसे नहला-धुला कर उसके कपड़े बदलती, पाउडर, क्रीम लगाती, लहंगा, चुन्नी पहना कर अपनी गुड़िया को एक दुल्हन-सी सजा देती। कभी उसे सुलाती तो कभी पढ़ाने लगती, यह सब काम वह बड़े जतन से करती। यह सब देख कर मुझे लगता कि वह रबड़ की गुड़िया कोई खिलौना नहीं अपितु उसमें भी प्राण है। वह भी साँस ले सकती है। एक दिन गुड़िया से खेलते-खेलते अचानक गौरी बिगड़ जाती है और अपनी गुड़िया को बुरी तरह पीटने लगती है। वह गुड़िया के बाल खींच कर उसे पीटती ही जाती थी। उसके इस व्यवहार से मैं हकबका गया और मैंने गौरी से पूछा - "गौरी, गुड़िया को क्यों मारती हो?"

"पापा, जब मैं मम्मी का कहना नहीं मानती तो मम्मी भी मेरी पिटाई इसी तरह करती है। आज मैं इसे ठीक करके ही छोड़ूँगी " - गौरी ने अपने दाँत पीसते हुए जवाब दिया था और मैं एक बुत-सा खड़ा उसका पीटना देखता रहा।

कुछ होश में आ चुपचाप पत्नी को ले आया।

पुत्री को स्वयं की नकल करती देखकर वह भी स्तब्ध रह गई। विदीर्ण हृदय, अश्रुपूरित आँखों से उसने गौरी को हृदय से लगाया और रँधे कंठ, कँपकँपाते स्वर में कहने लगी, "नहीं अब कभी ऐसा नहीं होगा गौरी.... अब कभी ऐसा नहीं होगा गौरी...."



अगर जीवित हो

डॉ अलका अग्रवाल

कहीं कुछ हो रहा अनुचित तो टकराना जरूरी है।
अगर जीवित हो तो, जीवित नजर आना जरूरी है।
कभी चलते हुए गिर जाओ उठ जाना जरूरी है।
अगर हो सत्य के साथी तो अड़ जाना जरूरी है।

हो शत्रु सामने तो, उससे लड़ जाना जरूरी है।
युवा हो तुम तुम्हारा, जोश में आना जरूरी है।
वतन पर हो विपद तब, होश में आना जरूरी है।
हो जब भारत ही खतरे में, उबाल आना जरूरी है।

वतन के वास्ते जीना है, मर जाना जरूरी है।
तुम्हीं तकदीर भारत की, यह समझाना जरूरी है।
हमें अपने पराए की, समझ आना जरूरी है।
अगर जीवित हो तो, जीवित नजर आना जरूरी है।

ठंडे रिश्ते

डॉ. बीना बुदकी

शमशान में लाशों का ढेर लगा हुआ था। कई के चेहरे बता रहे थे कि कब ये कर्मचारी अपने आधीन लाश को ले ले और हम भागें। ज्यादातर अग्नि देते ही भागने लगते, उसके ठंडे होने तक कोई एक आध ही रुकता। या जिनको लड़की दाह देने आती वह रोती हुई बैठी रहती।

सुरेशलाल के कोविड शरीर को लालू दाह संस्कार के लिए लकड़ियों पर रख रहा था। उसे अग्नि भी समाज सेवी संस्था के लोग ही देने वाले थे। उसके परिवार में सभी को कोरोना हो गया था। इसलिए किसी के आने की उम्मीद ना थी। सुरेशलाल बीना ताई की बिल्डिंग में ही ४ महीने पहले बड़े बेटे के पास आए थे।

सुरेशलाल को बुखार ज्यादा होने पर एम सी हस्पताल में एडमिट करा दिया गया था। पड़ोस में रहती बीना ताई ने सारा बंदोबस्त करा दिया था। वह अपने संस्था की अध्यक्ष थी। सुरेशलाल से मिलने बीना ताई हस्पताल भी गई। उनका हाल-चाल पूछा पर उनका जवाब सुनकर बीना ताई बड़ी दुखी हुई। सुरेश लाल बीवी के मरने के बाद बड़े बेटे के पास मुम्बई आए। दूसरा बेटा भी पास में ही रहता था कभी-कभी वहाँ भी चले जाते थे। बड़े बेटे के पास ज्यादा जगह न होने के कारण उन्हें पिता जी भारी लगते थे। वह हमेशा नीचे ही बैठे रहते थे। आते जाते बीना ताई से बात होती थी।

सुरेशलाल ने भरे मन से कहा, अब तो ऊपर वाला ही ले जाए। किसी को मेरी जरूरत नहीं। जायदाद के सारे कागज पत्र भी लिखवा लिए। मैंने सुरेश लाल जी से कहा आपने क्यों दस्तखत करके दे दिया। वह भरे मन से बोले, पिछले एक महीने से दिमाग खा गए। बिटिया तुम नहीं समझोगी मेरा दर्द। इस बेटे के पास जावो या उस बेटे के पास हर जगह वही सिरदर्दी थी। मैं वापस घर अब जिंदा नहीं जाना चाहता। हो सके तो मेरा दाह संस्कार कर देना। मैंने सुना है आपकी संस्था कोरोना वाले लोगो का भी दाह संस्कार करती है। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे।

सुरेशलाल की बात सुनकर दिल बड़ा दुखी हुआ। पर कर भी क्या सकते थे। हिम्मत बँधाई और बड़ी तसल्ली दी लेकिन बीना ताई से बात करते-करते उनका हाथ पकड़ कर इस दुनिया को अलविदा कह दिया। बहुत कोशिश की पर कुछ न हुआ।

घर खबर भी भेजी पर कोरोना की आड़ में कोई न आया। बड़े बेटे ने पीछा छुड़ाते हुए कहा, ताई आप ही वहाँ से शमशान भिजवा देना हमें तो बाँडी मिलेगी नहीं और फिर पूरे घर में सभी को कोरोना है। आपका बहुत बहुत धन्यवाद ताई।

हस्पताल से दूसरे दिन प्लास्टिक में बाँध कर सुरेशलाल मलाड शमशान आ गए। बीना ताई ने एक बार फिर फोन किया सुरेशलाल के बेटे को कहा, "यहाँ शमशान आ जाओ गंगाजल लेते आना अपने हाथो से पिला दो उनको शांति मिलेगी और दाह भी दे देना। तुम आ जाओ मैं कोरोना ड्रेस भी दे दूँगी। हम लोग भी तो यहाँ कर ही रहे हैं। आपके पिता हैं अब तो हमेशा के लिए चले गए आप आ जावो, पर वह नहीं आया।"

वसुधा

लालू थोड़ी सूखी लकड़ियाँ लेकर सुरेशलाल के चारों ओर लगा रहा था। बीना ताई ने सुरेशलाल के उस पार्थिव शरीर में अग्नि देने के लिए पूरी विधिवत पूजा की और मंत्र पढ़े। दुखी मन से अग्नि दाह दे दिया। मन ही मन सोचती रही इस पुत्र के लिए कितने जतन किए होंगे इस पिता ने पर आज उसे अंतिम विदाई देने के लिए कोरोना की आड़ लेकर नहीं आया। घर में सभी को था केवल सुरेश लाल ही हमेशा के लिए चला गया। तभी सुरेशलाल के बड़े बेटे की आवाज सुनाई दी। “ताई ताई”

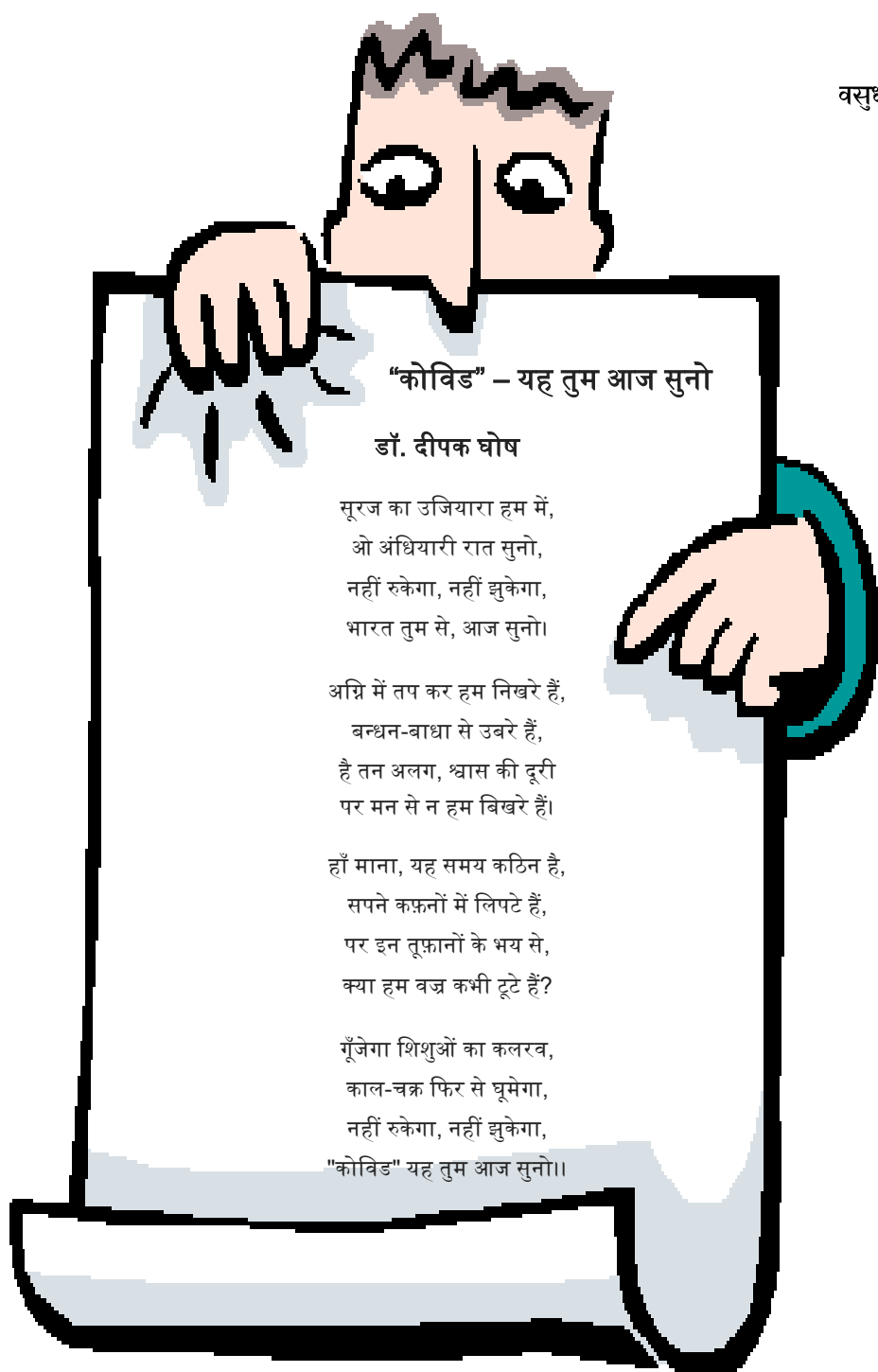
उधर सुरेशलाल का शरीर इतनी तेजी से धूँ धूँ करने लगा था। मानो वह पल भर में ही राख हो जाना चाहता था। मैंने दुखी मन से कहा, “थोड़ा पहले आ जाते। मेरी बात को पता नहीं सुना भी कि नहीं। पर तपाक से बोला, “ताई पापा के गले में चेन और अँगूठी थी, क्या वह निकाली थी।” बीना ताई ने हैरान होकर उसका चेहरा देखा। यहाँ तो प्लास्टिक में ऐसे ही आए थे हमने नहीं देखा। हस्पताल जाकर पता कर लो।”

वह एक सेकेंड भी न रुका और हस्पताल की ओर भागा।

बीना ताई बोझिल कदमों से बाहर आई, सोचती रही कि स्वयं सेवी संस्थाएँ ठंडे रिश्तों का दाह संस्कार करें और खून के रिश्ते सोने की चेन और अँगूठी ढूँढते फिर रहे हैं, उसमें कोरोना नहीं है।

Commented [ST1]:





“कोविड” – यह तुम आज सुनो

डॉ. दीपक घोष

सूरज का उजियारा हम में,
ओ अंधियारी रात सुनो,
नहीं रुकेगा, नहीं झुकेगा,
भारत तुम से, आज सुनो।

अग्नि में तप कर हम निखरे हैं,
बन्धन-बाधा से उबरे हैं,
है तन अलग, श्वास की दूरी
पर मन से न हम बिखरे हैं।

हाँ माना, यह समय कठिन है,
सपने कफ़नों में लिपटे हैं,
पर इन तूफ़ानों के भय से,
क्या हम वज्र कभी टूटे हैं?

गूँजेगा शिशुओं का कलरव,
काल-चक्र फिर से घूमेगा,
नहीं रुकेगा, नहीं झुकेगा,
“कोविड” यह तुम आज सुनो॥

उम्मीद कोरोना संकटकाल में वरदान हो सकता है “आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस”

उमेश पंसारी

मानवीय सभ्यता और इतिहास चाहे विज्ञान से कितनी ही दूरी पर क्यों न रहे हों, किन्तु आधुनिक समय में विज्ञान मानव के जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। विज्ञान और तकनीक ने एक जाल हमारे चहुँ ओर निर्मित कर दिया है, जिसके बिना हमें जीवनयापन करना असमर्थ प्रतीत होता है। मुर्गे की बाँग की जगह वैज्ञानिक अलार्म घड़ी या मोबाइल बजकर हमें जगाते हैं और पंखे, कूलर आदि सुकून की नींद सुलाते हैं। इन सभी उपकरणों की तकनीक का ही तो नाम है – “विज्ञान”। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को हिंदी में “कृत्रिम बुद्धि” कहा जाता है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, कि मशीन में सोचने-समझने और निर्णयन क्षमता का विकसित होना। इंसानों की भाँति बुद्धिमत्ता यदि किसी मशीनी दिमाग में आ जाए तो यह किसी चमत्कार से कम नहीं है। यही तो है “विज्ञान का चमत्कार” जिसकी आज संकटकालीन स्थिति में बहुतों को सर्वाधिक आवश्यकता है।

वर्तमान का सहारा और भविष्य के सौन्दर्य की उम्मीद विज्ञान ही है। कोरोना संकटकाल से जुझते विश्व ने तकनीकी ज्ञान का उपयोग करके अनेक जाँच मशीनें तैयार कर ली हैं। भारत में अप्रैल महीने में एक दिन ऐसा भी आया, जिसमें एक दिन में दर्ज कोरोना संक्रमित व्यक्तियों की संख्या विश्व में सर्वाधिक भारत की थी। ऐसी भयावह स्थिति में जनता द्वारा कर्फ्यू और सामाजिक दूरी का पालन स्वाभाविक है। किन्तु यह अंतिम हल नहीं है। खान-पान की वस्तुओं का व्यापार बंद करना, दवाइयों की दुकानें और चिकित्सा क्षेत्र से जुड़ी गतिविधियों पर रोक लगाना सम्भव नहीं हैं, लेकिन खतरा तो इनमें भी है। इसीलिए विचार आता है, कि क्यों न रश्मि की मदद ली जाए? अब आप सोच रहे होंगे कि यह रश्मि कौन है?

जरा ठहरिये। रश्मि किसी लड़की का नाम नहीं है, अपितु आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के अंतर्गत भारत में निर्मित विश्व की पहली हिंदी-भाषी रोबोट है, जिसमें बोलने, सुनने, देखने, समझने, याद रखने और बात करने की कुशलता है। समाज में यदि रश्मि जैसे रोबोट्स को कोरोना संकटकाल में कुछ चयनित क्षेत्रों में व्यापार, प्रशासनिक व्यवस्था, मोनिटरिंग, डाटा कलेक्शन, जागरूकता, मास्क वितरण, सैनेटाईजेशन, वैक्सीन पंजीकरण हेल्पर और वाहन चालक के रूप में उपयोग किया जा सकता है। इससे संक्रमण का फैलाव कम होगा साथ ही प्रशासन और सरकार को व्यवस्थाओं में मदद मिलेगी। वर्तमान में यह केवल एक विचार है, जो कहीं न कहीं भविष्य में ऐसा होने की आशा के साथ जीवित है। इसके परिपालन के लिए हमारे समाज को विज्ञान को और अधिक समझने की आवश्यकता है ताकि विज्ञान का प्रयोग सीमित, सुलभ और सही प्रयोगों के लिए ही हो व प्राकृतिक क्षति न हो।







मैं कैलेंडर नहीं बन सकती
जहाँ तुम गोद सको
अपने स्वार्थी साक्षात्कार के दिन
क्या तुम नहीं आँक सकते
मेरे हृदय पुष्प में एक हरा पत्ता
और मेरे मन के आँगन में
क्या कोई तुलसी नहीं मुस्कुराएगी

तुम उतना ही सुनो
जितना मैं देख सकती हूँ तुम्हें
किसी ठीक होते समय में
फूलों के गुच्छों के बीच
और बची रहे वे आँच
जब तुम पहली बार
मेरी आँखों में उतरे थे.

भारतीय साहित्य और उसकी वैश्विक प्रतिष्ठा

डॉ. विमलेश कान्ति वर्मा

भारत के सांस्कृतिक वैभव तथा भारतीय साहित्य की सम्पन्न परम्परा ने विदेशी विद्वानों को निरंतर आकृष्ट किया है। जर्मन विद्वान गेटे (१७४९-१८३२) ने तो कालिदास द्वारा लिखित नाटक 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उसे विश्व साहित्य की अन्यतम कृति माना है। सर विलियम जॉस (१७४६-१७९४) जो कलकत्ते के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में प्रतिनियुक्त थे उन्होंने भारतीय साहित्य की विशालता की चर्चा करते हुए यहाँ तक कहा कि एक जीवन में कोई भी व्यक्ति सम्पूर्ण भारतीय साहित्य की अपनी विविधता तथा विशदता के कारण उससे पूर्णतः परिचित नहीं हो सकता। विलियम जॉस संस्कृत भाषा को तो ग्रीक और लैटिन भाषाओं से अधिक पूर्ण और श्रेष्ठ मानते थे। फ्रांसीसी विद्वान अलेन डैनियल (१९०७-१९९४) ने अपने ग्रन्थ 'भारत वर्ष का इतिहास' में संस्कृत भाषा और उसके साहित्य को विश्व साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि माना है।

भारत के स्वतन्त्र होने से पहले सामान्यतः विदेश में भारतीय साहित्य से तात्पर्य संस्कृत साहित्य से ही होता था। यही कारण है कि जर्मन विद्वान गेटे, ब्रिटिश विद्वान विलियम जॉस तथा फ्रांसीसी विद्वान अलेन डैनियल सभी अपने भारत विषयक ग्रंथों में संस्कृत साहित्य की ही चर्चा और उसका मूल्यांकन करते हैं। स्टेन नो की पुस्तक 'इंडियन ड्रामा' तथा एम. विंटरनिज़ की पुस्तक 'अ हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन लिटरेचर' संस्कृत साहित्य की ही पुस्तकें हैं। संस्कृत साहित्य की वैश्विक प्रतिष्ठा के कारण ही यूरोप और अमरीका के सभी प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में पर्याप्त समय से संस्कृत भाषा और साहित्य का अध्ययन और अध्यापन हो रहा है। संस्कृत साहित्य के अंतर्गत जहाँ वैदिक साहित्य, उपनिषद्, पुराण, रामायण और महाभारत का अध्ययन होता है वहीं कालिदास, भास, भवभूति, माघ तथा हर्ष आदि के ग्रन्थों का भी अध्ययन भारतीय विद्या विभागों में होता है।

भारतीय भाषाओं में हिंदी की भाषिक तथा साहित्यिक दृष्टि से भी अध्ययन - अनुसंधान की विदेशी परम्परा रही है। हिंदी भाषा के व्याकरण का पहला ग्रन्थ फारसी भाषा में लिखा गया मिर्जा खान का ब्रजभाषा व्याकरण ग्रन्थ वर्ष १६७६ में प्रकाशित हुआ था। इसके बाद जॉन जोशुआ केटलार, हेडले आदि कितने ही विदेशी विद्वानों ने हिंदी के व्याकरणिक पक्ष पर लिखा पर हिंदी साहित्य के अध्ययन का सिलसिला फ्रांसीसी विद्वान गार्सि द तासी के ग्रन्थ 'हिन्दुई साहित्य का इतिहास (१८७०) से ही प्रारम्भ होता है जो फ्रांसीसी भाषा में हिंदी साहित्य के आलोचनात्मक विश्लेषण का इतिहास परक पहला ग्रन्थ है। इतालवी विद्वान एल.पी. तेसीतोरि ने तो राम चरित मानस और वाल्मीकि रामायण के तुलनात्मक अध्ययन पर फ्लोरेंस विश्वविद्यालय से वर्ष १९११ में पी. एच.डी. की उपाधि प्राप्त की थी। अँगरेज़ विद्वान जे.ई. कारपेंटर ने वर्ष १९१८ में 'थियोलोजी ऑफ़ तुलसीदास' विषय पर लन्दन विश्व विद्यालय से डी. लिट्. की उपाधि प्राप्त की थी। फ्रांसीसी विद्वान प्रोफ. बोदवील ने वर्ष १९३५ में तुलसीदास पर अपना शोध प्रबंध लिखा और रूसी विद्वान ए. पी. बरान्निक्वोव ने वर्ष १९३६ में समकालीन हिंदी साहित्य पर अपना निबंध प्रकाशित कराया। इस प्रकार जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैंड, इटली तथा रूस आदि सभी प्रमुख देशों में हिंदी साहित्य के विषयों पर विश्वविद्यालयों की उच्चतम शोध उपाधि की स्वीकृति विश्व स्तर पर भारतीय

साहित्य की मान्यता का प्रमाण ही है। अधिक विस्तार से हिंदी अध्ययन की दीर्घ वैश्विक परम्परा के लिए *Studies on Hindi, A Comprehensive Bibliography*, Dr. Vimlesh Kanti Verma, Pilgrims Publishing, Varanasi सन्दर्भ ग्रन्थ को देखा जा सकता है।

वर्ष १९४७ में भारत के स्वतन्त्र होने पर और वर्ष १९५० में भारत जब विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र घोषित हुआ तो भारतीय भाषाओं के साहित्य के प्रति भी विश्व स्तर पर विदेशी विद्वानों का रुझान होना स्वाभाविक ही था। भारतीय संविधान निर्माताओं ने भारत की प्रधान भाषाओं का विकास हो सके इसके लिए भारतीय संविधान की अष्टम अनुसूची की कल्पना की और देश की १४ प्रमुख भाषाओं को अनुसूची में रखकर उनके विकास का दायित्व लिया। अनुसूचित भाषाएँ थीं - असमिया, उड़िया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, पंजाबी, बांग्ला, मराठी, मलयालम, संस्कृत व हिंदी। इसके बाद इस अनुसूची में सिन्धी, फिर नेपाली, कोंकडी और मणिपुरी, फिर बोडो, डोगरी, मैथिली और संताली जुड़ीं। आज अष्टम अनुसूची में २२ भारतीय भाषाएँ हैं। तत्त्वतः इन सभी २२ भाषाओं में लिखा और वाचिक साहित्य भारतीय साहित्य है। इन २२ भाषाओं में प्रारम्भ से ही हिंदी अपने संख्या बल तथा क्षेत्र विस्तार के कारण केन्द्रीय महत्व की भाषा बनी। वह देश में व्यापार, जनसंचार, शिक्षा, मनोरंजन तथा राजनीति की भाषा बनकर उभरी तथा उसे राजभाषा, राष्ट्रभाषा तथा सम्पर्क भाषा की प्रतिष्ठा मिली।

भारतीय भाषाओं में संख्याबल की दृष्टि से हिंदी के अतिरिक्त बांग्ला, उर्दू, तथा तमिल भाषा का भी महत्वपूर्ण स्थान है इसलिए विदेशी विद्वानों का ध्यान बांग्ला, उर्दू तथा तमिल की प्राचीन और अर्वाचीन साहित्यिक समृद्धि के कारण और भी गया पर चूँकि सम्पूर्ण भारत को समझने के लिए हिंदी ही एक 'कुंजी भाषा' के रूप में मानी गई इसलिए सर्वाधिक व्यापक स्तर पर और वैश्विक क्षितिज पर हिंदी को ही सर्वाधिक मान्यता मिली। उर्दू को चूँकि हिंदी की एक भाषिक शैली के रूप में देखा गया और यह मान लिया गया कि फारसी लिपि के अतिरिक्त उर्दू और हिंदी में कोई विशेष अंतर नहीं है, इस दृष्टि से हिंदी के साथ ही उर्दू भी विश्वविद्यालय स्तर पर पढाई जाने लगी पर हिंदी की व्यापक मान्यता वैश्विक स्तर पर जो १९ वीं शती में थी उसका २० वीं सदी में बहुत विस्तार हुआ।

यह विस्तार भाषा शिक्षण के क्षेत्र में अमरीका, योरोप के विविध देशों में, खाड़ी के देशों में, आस्ट्रेलिया आदि देशों में देखा जा सकता है वहीं अनुसंधान के क्षेत्र में भी साहित्य के विविध पक्षों पर विश्व भर में अध्ययन और अनुसंधान हो रहा है। उल्लेखनीय बात साहित्य के सन्दर्भ में कही जा सकती है कि भारतीय साहित्य विशेषकर हिंदी साहित्य के अनुसंधान परक पक्ष पर विदेशी विश्वविद्यालयों में गम्भीर अध्ययन प्रारम्भ हुआ। इस सन्दर्भ में बेल्जियम के ल्यूवैन विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रोफेसर विनांद कैल्वर्ट के कार्यों का उल्लेख किया जा सकता है। कबीर, दादू, नानक तथा रैदास आदि संत कवियों के मूल पाठ का अनुसंधान जिसे पाठालोचन कहा जाता है उस क्षेत्र में उनके द्वारा किया गया अनुसंधान प्रोफ. माता प्रसाद गुप्त, प्रोफ. उमाशंकर शुक्ल तथा प्रोफ. पारस नाथ तिवारी के श्रम साध्य कार्य का स्मरण दिलाता है। डॉ. कामिल बुल्के ने 'राम कथा - उद्भव और विकास' को अपने अनुसंधान का विषय बनाया। डॉ. आर.एस. मक्गेगर ने हिंदी कृष्ण साहित्य का, इमरे बंगा ने घनानंद का, लिंडा हेस ने कबीर के साहित्य का अनुसंधान परक अध्ययन प्रस्तुत किया।

भारतीय साहित्य का एक दूसरा आयाम विदेश में बसे हुए प्रवासी भारतीयों द्वारा भारतीय भाषाओं में लिखा गया साहित्य है। प्रवासी भारतीयों की संख्या विश्व में आज ढाई करोड़ से अधिक बताई जाती है। प्रवासी भारतीय भी दो कोटि के हैं। पहले वे हैं जो गिरमिट प्रथा के अंतर्गत बहला फुसलाकर फ़ीजी, मारीशस, सूरीनाम, दक्षिण अफ्रीका, त्रिनिदाद, गुयाना आदि देशों में ले जाए गए थे तथा गिरमिट की अवधि समाप्ति पर वहीं बस गए। दूसरी कोटि में वे भारतीय हैं जो भारत के स्वतन्त्र होने के बाद से सुन्दर भविष्य और व धन अर्जन के निमित्त अमरीका, इंग्लैण्ड, जर्मनी, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में गए और वहीं बस गए पर इन प्रवासी भारतीयों के मध्य हिंदी भारतीय अस्मिता की प्रतीक बनी। कनाडा से जनवरी २००४ से प्रकाशित होने वाली इस "वसुधा" पत्रिका की संस्थापक, सम्पादक व प्रकाशक डॉ. खेह ठाकुर भी जहाँ एक ओर अपनी पत्रिका द्वारा हिंदी का प्रचार-प्रसार कर रही हैं, वहीं दूसरी ओर हर विधा में लिखे अपने साहित्य द्वारा, विशेष रूप से, 'कैकेयी चेतना-शिखा' जो म.प्र. साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित है, 'लोक-नायक राम', 'श्रीरामप्रिया सीता', 'दशानन रावन', आदि द्वारा भारतीय संस्कृति को विदेश में प्रसारित करने का मुख्य कार्य भी कर रही है। प्रख्यात भारतीय अमरीकी हिन्दी कथाकार डॉ. सुषुम बेदी अमरीका में बसे हुए प्रवासी भारतीयों के बारे में लिखती हैं - 'हर हिन्दुस्तानी यहाँ एक व्यापारी है, अमेरिका के एक बड़े बाज़ार में हिन्दुस्तानी अपनी प्रतिभा, ज्ञान, कौशल और अनुभव को लेकर आता है और खुद को चढ़ा देता नीलामी पर। अच्छा दाम लग जाए तो क्या खूब-बढ़िया-सी नौकरी, सुन्दर सा घर, नमकीन- सी बीवी और बलार्ड गर्ल फ्रेंड सबका सौदा हो जाता है। न बढ़िया दाम लगे तो भी बैरा या दुकानदार की नौकरी ही सही। ले-देकर किसी को यह सब घाटे का सौदा नहीं लगता। - सुषुम बेदी, हवन, पृष्ठ १२९.

भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति मानव की सहजात प्रवृत्ति है। यही कारण है कि ये प्रवासी भारतीय जहाँ अपनी भाषा की सुरक्षा, संरक्षा और प्रतिष्ठा के लिए सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर निरंतर प्रयत्नशील हैं वहीं वे अपने भावों और विचारों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति अपनी हिंदी में करते हैं। किसी-किसी की हिंदी हमारी हिंदी की तरह परिनिष्ठित हिंदी नहीं है। फीजीवासी अपनी हिंदी को फीजी हिंदी या फ़ीजी बात कहते हैं, सूरीनाम में जिस हिंदी का विकास वहाँ के भारतीयों ने किया है उसे वे सरनामी, सरनामी हिंदी और सरनामी हिन्दुस्तानी कहते हैं तथा दक्षिण अफ्रीका के भारतीय अपनी हिंदी को नेटाली हिंदी कहते हैं। दक्षिण अफ्रीका में पहुँचे विविध भाषा-भाषी भारतीयों ने किस प्रकार पारस्परिक सम्पर्क के लिए हिंदी को अपना लिया इसका बड़ा जीवंत चित्रण भवानी दयाल सन्यासी ने अपनी पुस्तक 'प्रवासी की आत्म कथा' में इस प्रकार किया है - "जब गिरमिट लिखाकर भारतीय मजदूर दक्षिण अफ्रीका जाने और वहाँ अबाद होने लगे तो उनके सामने परस्पर विचार-विनिमय की विकट समस्या पैदा हुई। गिरमिटियों की गाँठ में तो बँधे थे केवल हिन्दी-भाषी और मद्रासी। उनके पीछे-पीछे गुजराती, तथा कुछ अन्य प्रान्त-वासी भी व्यवसाय के विचार से स्वतंत्ररूपेण वहाँ जा पहुँचे। इस प्रकार हिन्दुस्तान के विभिन्न प्रान्तों के मनुष्यों का वहाँ जमाव हो गया। उनमें कोई हिन्दी बोलता था तो कोई गुजराती, किसी की बोली तामिल थी तो किसी की तेलगु, कुछ मलयालम-भाषी थे तो कुछ कन्नड़-भाषी। एक दूसरे की बोली समझ नहीं पाते थे। इससे काम-काज में बड़ी अड़चन होने लगी, कब तक पड़ोसी के सामने मौन साधे रहते, कहाँ तक इशारे से काम किया करते? यह स्थिति

तो बड़ी अवांछनीय थी। आपस में बातचीत करने के लिए एक सार्वजनिक भाषा का सवाल सामने आया, जिसे उन्होंने बड़ी सुगमता से हल कर लिया। इस बात पर विचार करने के लिए न कहीं सभा-सम्मेलन की बैठक हुई थी, न विद्वानों की वक्तुताएँ और न किसी प्रकार प्रकार की सार्वजनिक चर्चा ही। प्रत्येक भारतीय ने व्यक्तिगत रूप से अपने मन में प्रस्ताव पास कर लिया कि विभिन्न भाषा-भाषियों से बातचीत करने के लिए हिन्दी से काम लेना चाहिए। हिन्दी अपनी सरलता के प्रताप से प्रवासी भाइयों की राष्ट्रभाषा बन गई। नेपाल में मद्रासियों की संख्या सबसे अधिक है और हिन्दी-भाषियों की तादाद है उनसे बहुत कम। पर मद्रासियों के लिए हिन्दी सीखना अनिवार्य हो गया। तामिल और तेलगु द्रविड़ भाषाएँ होने से तो बहुत अच्छी बोल लेते हैं और कोई टूटी-फूटी हिन्दी, पर बोल लेते हैं सभी। यहाँ यह भी कह देना अप्रासंगिक न होगा कि केवल दक्षिण अफ्रीका का ही नहीं, प्रत्युत जिन-जिन उपनिवेशों में हमारे देश-वासी गिरमिट की प्रथा में गये हैं, यद्यपि वे एक-दूसरे से हजारों कोस दूर हैं, कोई प्रशांत महासागर के तट पर है तो कोई हिन्दू महासागर के किनारे, कोई अमेरिका के दक्षिण भाग में है तो कोई अफ्रीका के दक्षिणीय भाग में, तो भी यह देखकर विस्मय होता है कि उन सभी देशों के प्रवासी भारतीयों ने पारस्परिक व्यवहार के लिए एकमत से हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा स्वीकार किया – उसी से अपनी तत्कालीन आवश्यकता की पूर्ति की।"

प्रवासी की आत्मकथा - भवानी दयाल सन्यासी प्रवासी भारतीयों की राष्ट्रभाषा पृष्ठ १६८

फीजी के कमला प्रसाद मिश्र, जोगिन्दर सिंह कैवल, प्रोफ. सुब्रमनी, प्रोफ. रेमण्ड पिल्लई, श्री गुरुदयाल शर्मा, श्री महेश चन्द्र शर्मा 'विनोद' सूरीनाम के डॉ. जीत नराइन, पंडित हरदेव सहतू, अमर सिंह रमण, हरिदत्त लछमन 'श्रीनिवासी', आशा राज कुमार, सुरजन परोही आदि, मारीशस के अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर, वीरसेन जागा सिंह, भानुमती नागदान, सरिता बुधु, प्रहलाद राम शरण ने हिंदी को निरंतर समृद्ध किया है और विश्व स्तर पर हिंदी को प्रतिष्ठा दिलाई है। फीजी का हिंदी साहित्य ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड तथा कनाडा में वहाँ से आकर बसे हुए भारतीयों के मध्य तथा सूरीनाम का साहित्य हॉलैंड तथा योरोप के अन्य देशों में, मारीशस का साहित्य दक्षिण अफ्रीका तथा अफ्रीका महाद्वीप के अन्य देशों में जहाँ भारतीय बसे हुए हैं, बड़े शौक से पढ़ा जाता है और इस प्रकार विश्व के अनेक देशों में भारतीय साहित्य पहुँचता है। प्रवासी भारतीय साहित्य जो गिरमिटिया वंशजों द्वारा लिखा साहित्य है उसके महत्त्व को भारत ने पिछली शताब्दी के नवें दशक के आसपास पहचाना और इस दिशा में कई महत्वपूर्ण कार्य प्रकाशित हुए। भारतीय ज्ञानपीठ ने 'प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य' नामक बृहत् ग्रन्थ प्रकाशित किया तो राष्ट्रीय साहित्य अकादमी ने 'फीजी का सृजनात्मक हिंदी साहित्य' तथा 'मारीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य' और राजकमल प्रकाशन समूह ने 'सूरीनाम का सृजनात्मक हिंदी साहित्य' नामक बृहत् ग्रन्थ प्रकाशित किये। अनेक भारतीय विश्वविद्यालयों में भारतीय डायस्पोरा विभागों की स्थापना हुई और प्रवासी भारतीय विशेषकर हिंदी के सृजनात्मक साहित्य का विधिवत अध्ययन अध्यापन प्रारम्भ हुआ।

भारत एक महा देश है। भारत आज एक अरब से भी अधिक जनसंख्या वाला तथा १६५२ भाषाओं वाला देश है। भारत की विशाल वाचिक और लिखित साहित्यिक सम्पदा से विश्व परिचित है। तमिल और संस्कृत की सम्पन्न साहित्यिक सम्पदा हमें उत्तराधिकार में मिली है। आज जितना साहित्य प्रतिवर्ष भारतीय भाषाओं में

प्रकाशित हो रहा है उतना साहित्य प्रतिवर्ष पूरे योरोप में भी सम्भवतः प्रतिवर्ष प्रकाशित नहीं हो रहा, पर विभिन्न भारतीय भाषाओं में अभिव्यक्त सृजनात्मक रचना का बहुत थोड़ा अंश ही दूसरे देशों तक पहुँच पाता है। पारस्परिक भाषिक बोधगम्यता का न होना इसमें सबसे बड़ी बाधा है। इस बाधा से उबरने का एकमात्र उपाय 'अनुवाद का सेतु' है जिसके माध्यम से एक भाषा की सम्वेदना दूसरी भाषा तक पहुँचती है। बहुभाषी भारत के लिए यह सेतु स्वदेश के लिए जितना महत्वपूर्ण है उतना ही महत्वपूर्ण है वैश्विक स्तर पर। भारतीय साहित्यिक अभिव्यक्ति को विश्व भर में पहुँचाने के लिए, वैश्विक क्षितिज पर भारतीय साहित्य की प्रतिष्ठा हो सके इसके लिए आवश्यक है कि भारतीय भाषाओं के अच्छे साहित्यिक संचयन तैयार हों और वे कम से कम विश्व की प्रधान भाषाओं में अनूदित हों। जैसे भारतीय भाषाओं की रचनाएँ हिंदी में अनूदित होकर सम्पूर्ण भारत में पहुँच जाती हैं उसी प्रकार भारतीय साहित्यिक रचनाएँ जर्मन, फ्रांसीसी, स्पेनी, रूसी, अरबी और चीनी में अनूदित होकर विश्व बाज़ार में पहुँच सकेंगी। हिंदी के प्रेमचंद और बांग्ला के रबीन्द्रनाथ टैगोर तो अनुवाद के माध्यम से ही विश्व के साहित्य प्रेमियों तक पहुँचे हैं पर भारतीय साहित्य तो इतना विशाल और सम्पन्न है कि उसकी वैश्विक प्रतिष्ठा के लिए अनुवाद के ही सेतु को सशक्त करना होगा। आज विदेशी भाषाओं में अनूदित समकालीन भारतीय साहित्य परिमाण में इतना कम है कि वह भारतीय साहित्य की वैश्विक छवि नहीं बना सका है। प्रेमचंद के गोदान और निर्मला, भीष्म साहनी के तमस, कृशन चंदर के दादर पुल के बच्चे, जैनेन्द्र के त्याग पत्र, श्रीलाल शुक्ल के राग दरबारी आदि जैसी कुछ ही साहित्यिक कृतियों से विदेशी परिचित हो सके हैं। अन्य भारतीय भाषाओं का समकालीन साहित्य जो हिंदी साहित्य की ही तरह समृद्ध और विपुल है, वह अभी भी विदेशी साहित्य प्रेमियों तक नहीं पहुँच पाया है। हम आशा करते हैं कि इस नयी सदी में हम अनुवाद के अंतरराष्ट्रीय सेतु को पृष्ठ कर सकेंगे और हिंदी सहित भारत की विभिन्न भाषाओं की अकूत साहित्यिक सम्पदा को विश्व के समक्ष प्रस्तुत कर सकेंगे जिससे भारतीय साहित्य की वैश्विक छवि और प्रभावी बन सकेगी।

शबरी राम मिलन....

डॉ. नूतन पाण्डेय

सदियों से तुम जिसकी प्रतीक्षा कर रही थीं माँ,
देखो, वो तुम्हारा राम तुम्हारे सामने खड़ा है।
राम के मीठे बोल शबरी के कानों में मिश्री सी घोलने लगे,
राम नाम मे लीन उसके शिथिल अंग पुलकित-से होने लगे।
बूढ़ी माँ अपनी किस्मत पर विश्वास भला कैसे करतीं !
झुर्री से ढकी उसकी आँखें कभी खुलतीं कभी मुँदतीं।
सामने तो मानो उसके स्वर्ग का द्वार खुला था,
राजीव लोचन, आजानुबाहु, सुंदर, सलोना राम

साक्षात् उसके सामने खड़ा था ।
 बरसों की प्रतीक्षा खुशी बन आँसुओं में बह चली,
 अश्रु विगलित भरे कंठ से शबरी माँ बोल पड़ी।
 मेरे प्रभु राम, राघव, रघुनंदन!
 जन्मों की प्रतीक्षा के बाद आते हो?
 अपनी बूढ़ी माँ को इतना क्यों रुलाते हो।
 दंडकारण्य के ये वृक्ष तुम्हें मेरी कहानी सुनाएँगे,
 प्रतीक्षा के पल कैसे काटे, ये तुझको बतलाएँगे।
 तेरा न कोई अता था न पता,
 तू कौन है ये भी भला कहाँ जानती थी?
 मार्जार भाव से बस तेरा पावन नाम पुकारती थी।
 सब मुझको उलाहना देते, तू अधम से भी अधम श्रमणा,
 रघु के वंशज राम, इस जंगल में भला क्यों आएँगे?
 लेकिन मन कहता रहा, मेरे राम मुझसे मिलने अवश्य आएँगे।
 शबरी की बात सुन, राम तनिक सकुचाए,
 भीगी आँखों से शबरी के चरण छुए, मुस्काए
 धनी-मानी ज्ञानी कितना कोई, यदि भक्ति- भाव से क्षीण है
 जलहीन बादल जैसा वो मेरे लिए मूल्यहीन है
 मैं भक्ति का भूखा हूँ, तू नवधा भक्ति का सागर है,
 सारा जग कंकड़ पत्थर, तू पारस अनमोल है।
 प्रेम भरे वचनों को सुनकर, शबरी माँ वारी जाती थी,
 फिर भी एक शंका मन में रह-रह उसके आती थी।
 अन्तर्यामी राम, तुरंत शबरी की दुविधा भाँप गए,
 माँ के बिन बोले ही उसके मन को बाँच गए।
 कह दे माँ, वो सब कुछ, तेरे मन जो भाया है,
 तेरा बेटा तुझसे मिलने उत्तर से दक्षिण आया है।
 शबरी बोली – सच-सच बतलाना,
 मुझसे मिलने की खातिर क्या तूने दुष्कर ये वनवास लिया,
 या रावण का वध करने को दशरथ के घर में जन्म मिला ।

शबरी की भोली बातें सुन, राम तनिक मुस्काये थे,
 वो अपनी वाणी में थोड़ी, गुरुता अब ले आए थे।
 सच है, धरती को, रावण से मुक्ति दिलाने आया हूँ,
 लेकिन इस जग की खातिर मैं, कई संदेशे लाया हूँ।
 माँ सुन, युद्ध विजय करने में, अक्षोहिणी काम नहीं आती
 माँ का वरद हस्त हो जिस पर, विजय उसी को गले लगाती
 मेरी माँ, तुझको लगता है, वनवास भुगतने आया हूँ
 वचन प्राण से बढ़कर हैं, मैं तो ये बतलाने आया हूँ।
 माँ और मातृभूमि सबसे बढ़कर होते हैं,
 इन दोनों की तुलना में स्वर्गिक सुख भी छोटे हैं।
 पंक्ति के अंतिम मानव को, सत्ता जब गले लगाती है,
 स्वार्थ मुक्त हो सही अर्थों में, रामराज्य वो लाती है।
 स्त्री जाति पर अपनी, कुदृष्टि जो रखता है
 तेरा राम नराधम को कभी क्षमा नहीं करता है।
 माँ, क्या तुझको लगता है, मैं रावण का वध करने आया हूँ
 नहीं माँ, मैं तो आर्यावर्त को स्वर्ग बनाने आया हूँ।
 शबरी माँ विह्वल होकर, राम को निहारे जाती है,
 पर उनकी थोड़ी-सी ही बातें, उसकी समझ में आती हैं।
 आराध्य राम को खड़ा देख, आँखों में उसके जल भर आया,
 भूखे होंगे राम मेरे, मन में अब ये खयाल आया।
 लकुटिया टेक-टेक कर वो कुटिया के भीतर जाती है,
 भरी टोकरी बेरों की जल्दी से उठाकर लाती है।
 खट्टे होने के डर से वह, बेरों को चखती जाती है
 मीठे-मीठे बेर छाँटकर को वो खिलाती है
 माँ की ममता देख, राम भाव-विभोर हो जाते हैं,
 भक्ति की मूरत शबरी को सारूप्य पद दे जाते हैं।



कोरोना काल मे हिंदी साहित्य की प्रासंगिकता

डॉ. साधना गुप्ता

हिंदी सिर्फ भाषा नहीं है। वह देश की सभ्यता और संस्कृति की वाहक है। वह हमें सिखाती है जीव मात्र के प्रति करुणा का भाव, जीयो और जीने दो का मानवीय सन्देश, प्रकृति के सभी नियामक तत्वों का सम्मान। जैसे शतरंज के खेल में हर एक मोहरे की अपनी एक विशेष भूमिका होती है और इस खेल को जीतने के लिए हमें हर एक मोहरे की आवश्यकता पड़ सकती है फिर चाहे वह छोटा-सा सिपाही हो या शक्तिशाली रानी। इसी प्रकार जीवन में आए प्रत्येक व्यक्ति, वस्तु की अपनी एक विशेष भूमिका होती है। उनके योगदान और सहयोग के कारण ही हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पाते हैं। उनका योगदान छोटा हो या बड़ा किंतु वह आपको अपने लक्ष्य तक पहुँचाने के निमित्त बनते हैं। इसलिए अपनी सहायता करने वाले किसी भी व्यक्ति के योगदान को कभी कम नहीं आँकना चाहिए क्योंकि संभवतः उन्हीं के सहयोग से आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। हिंदी साहित्य हमें यह भी स्मरण करवाने में पीछे नहीं है कि यदि ऐसा न किया तो परिणाम भयंकर भी हो सकता है। आइए देखें कैसे ?

तेज रफ्तार से दौड़ती-भागती जिंदगी के पहिए अचानक कालचक्र द्वारा रोक दिए जाएँ तो, तो सोचो क्या हो ? कभी सोचा भी नहीं था परंतु वही सब कर दिखाया एक अति सूक्ष्म वायरस ने। स्मरण करवा दी मानव को उसकी वास्तविक स्थिति, स्मरण करवा दिया मानव को यदि वह ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ सृष्टि है तो उसका कारण हैं स्वयं ईश्वर। और वह दुनिया को मुट्ठी में कर सकता है तो उसका कारण है प्रकृति प्रदत्त अनन्त उपहार। अपनी सीमा रेखा पार की तो ...। यह प्रलय ही तो है जिसके लिए कामायनी में जयशंकर प्रसाद ने कहा है - एक तत्व की ही प्रधानता, कहो उसे जड़ या चेतन। आज कोरोना के समय में हम सभी एकमात्र कोरोना से ही चिंतित हैं। अब चाहे उसे हम जड़ कहें या चेतन। मद में चूर मानव को अपनी सामर्थ्य का अहसास करवा दिया प्रकृति ने और मानव द्वारा असंतुलित स्वयं को संतुलित करने हेतु संपूर्ण विश्व की मानवीय शक्ति और क्रियाओं पर विराम लगा कर मानो घोषणा और उद्घोष कर दिया - प्रकृति रही दुर्जेय पराजित हम सब थे भूले मद में, भोले थे, हाँ तिरते केवल सब विलासिता के मद में। इससे कोरोना काल में हिंदी साहित्य की प्रासंगिकता स्वयं सिद्ध हो जाती है।

मानव इतना व्यस्त हो गया था कि अपनों की क्या कहें ? उसके पास स्वयं के लिए भी वक्त नहीं बचा था। विज्ञान की प्रगति ने, मानव निर्मित संसाधनों ने विश्व को ग्राम के रूप में परिवर्तित भले ही कर दिया हो, परंतु ग्राम की वह भ्रात भावना तो भाई-भाई के मध्य भी कहीं खो गई थी। अंतहीन लालसा लिए दौड़ते-भागते मानव पर विराम लगा दिया प्रकृति ने। चोरी-चकारी, हत्या, बलात्कार जैसे अपराधों की गिनती मुश्किल होती जा रही थी। वातावरण प्रदूषित हो गया था। यहाँ तक की सृष्टि के पाँचों तत्व असंतुलित हो गए थे। शुद्धता तो जैसे स्वप्नवत हो गई थी। कोरोना काल ने लौक डाउन के माध्यम से थाम दिया सब कुछ और प्रकृति ने पुनः अपना स्वच्छ परिधान धारण कर लिया - वायु शुद्ध, नदियों का जल शुद्ध, सब कुछ शांत। मानव सीमित साधन में जीवन जीना सीख गया। परिवार के साथ समय बिताने से संबंधों को पुनर्जीवन मिल गया। अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होकर योग, ध्यान, अपने समाज व संस्कृति को अपना रहा है मानव। उस संस्कृति को जिसका उद्घोष है - "चरित्र व स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है।"

हिंदी साहित्य अपनी समग्रता में सदैव मानव में अंतर्निहित अच्छाईयों को महत्व देता रहा है - काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इत्यादि बुराईयों को त्यागने की बात करता रहा है। कबीर का कथन है - "प्रेम गली अति सांकरी, तामे दो न समाय", वहीं तुलसीदास का कथन है - "काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, नाथ नरक के पंथ" अर्थात् काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह यह सब जीवन को कष्ट कारक बनाने वाले हैं। अतः इनका त्याग कर देना चाहिए। कोरोना के कारण उपस्थित मृत्यु के भय ने मानव को इन्हीं जीवन मूल्यों और, विचारों की ओर प्रेरित किया है जिससे व्यक्ति की मानसिकता में, प्रवृत्तियों में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। सभी को महसूस होने लगा है - युग परिवर्तन का दौर आ गया है, युगांतर हो रहा है। जिसमें जीवन की रक्षा सर्वोपरि प्राथमिकता बन कर उभरी है। अहसास हुआ - जीवन सर्वोपरि है, जान है तो जहान है और भागती-दौड़ती जिंदगी सहसा थम गई। अभी तक मानव सोच रहा था जहाँ ही सब कुछ है, जान कुछ नहीं।

आज मात्रा गत अंतर के साथ सभी के दिमाग में जो बात गूँज रही है वह है - अब वक्त आ गया है भौतिक साधनों के पीछे दौड़ना छोड़ अपनों के संग साथ रह प्यार पाने और प्यार देने का, बाँटने का। सभी विकारों को त्यागने, तिलांजलि देने का, अत्यधिक कामनाओं को, महत्वाकांक्षाओं को त्याग धैर्य व संतोष धारण करने का। आवेश में आना, अचानक भड़क जाना, क्रोध और अत्यधिक चिंतन भी त्यागना होगा क्योंकि - "गोधन, गजधन, बाजिधन और रतनधन खानि, जब आवे संतोष धन सब धन धूरि समानि"।

कोरोना ने सिखा दिया जीवन जीने के लिए रोटी, कपड़ा और मकान ही मूलभूत आवश्यकता है। बहुत अधिक धन संग्रह के विचार से विदेश भागना, भौतिकवाद की दौड़ में दौड़ना, जीवन का लक्ष्य कदापि नहीं होना चाहिए। जब दुख में हमें अपने व अपना देश याद आया तो हम अपने जीवन को अपनों के लिए, अपने देश के लिए ही क्यों ना जिँ ? पता नहीं यह जीवन और हमारे अपने कब दूर हो जाएँ ? क्या यह सोच "जननी, जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" की ओर हमें नहीं लौटाती ?

कोरोना काल ने हमें सिखा दिया है - न्यूनतम आवश्यकताओं के साथ आनंद पूर्वक जीवन जीया जा सकता है। गलत तरीके से धन कमा कर मानवता के प्रति अन्याय करने से अच्छा है हम लालच से दूर रहकर सीमित संसाधनों में अपनों के संग रहकर आनन्दपूर्वक परोपकार में जीवन व्यतीत करें। और इस प्रकार हमारे पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय जीवन को नवजीवन दे गया यह कोरोना काल तथा लोक डाउन। अनुशासन, संयम, आत्मविश्लेषण, उत्तरदायित्व एवं संवेदनशीलता का पाठ पढ़ा दिया मानव मात्र को जिसके लिए कामायनी में प्रसाद का कथन है -

"प्रतिफलित हुई सब आँखें उस प्रेम ज्योति विमल से,
सब पहचाने से लगते आपनी ही एक कला से।
समरस थे जड़ या चेतन सुंदर साकार बना था,
चेतनता एक विकसती आनन्द अखंड घना था।"



ख्वाहिश

रचना मिश्रा

ख्वाहिश है अगर कुछ कर गुजर जाने की
ठहर मत तू चलता चल तू चलता चल....
ख्वाहिशों को उड़ान दे नभ में विचर
ठहर मत तू उड़ता चल तू उड़ता चल...
तू ही नदियों की अविरल धारा
तू ही मदमस्त पवन का झोंका
तू ही झरनों की कलकल धारा
एक बार इन्हें पलट कर तो देख
ठहर मत तू बहता चल तू बहता चल...
एक बार छोड़ दे लोग क्या कहेंगे
देख उसके बाद तू कहाँ खड़ा है
एक बार अपनी सोच को उड़ान दे
सपने बंद आँखों से नहीं खुली आँखों से देख
ठहर मत तू चलता चलता चलता चल....
मत घबरा कटीली रास्तों से
मत घबरा टेढ़ी-मेढ़ी रास्तों से
ठहर मत तू चलता चलता चलता चल...



हमें यहाँ से देखो

डॉ. मुक्ता

“मैं चाहता हूँ ---- यह सफर कभी खत्म न हो -- चेखव, तुर्गनेव, ताल्सतोय और उनके पात्र -- बोलते, बतियाते मेरे चारों ओर घूम रहे हैं -- मैंने समोवार में उबलती चाय को महसूस किया है और साइबेरिया के लम्बे बर्फ के रेगिस्तानों की ठंड में गलते लोगों की पीड़ा से आहत हुआ हूँ -- लगभग सुन्न -

“हम बस पहुँचने ही वाले हैं -- ” शिखा ने जोर देकर कहा।

सीट बेल्ट बाँधने, कुर्सियों को सीधी रखने की हिदायत के साथ हवाई जहाज के मास्को एयरपोर्ट पर उतरने की घोषणा हुई।

“मदर ! तुम तो भविष्यवक्ता हो --- ”

“चुप रहो -- सिद्धार्थ -- हवाई जहाज उतर रहा है --- ”

“रिलैक्स ममा -- बोलना मना नहीं है -- क्यों कॉजल ?”

सिद्धार्थ की बात सुनकर कॉजल खिलखिला उठी।

“कॉजल मेरी दोस्त है --- मुझसे छोटी है --- लेकिन एज ग्रुप मेरा है --- फिर --- तुम्हारी ‘संगीत गुरु’ भी है --- ” शिखा के स्वर में कठोरता थी।

“मैंने कब मना किया कॉजल मैम !” आप दोनों खुश रहेंगी तो मेरी दुनियाँ भी हरी-भरी रहेगी।”

सिद्धार्थ की बात ने वातावरण में रुई बिखेर दी। हवाई जहाज के पहिये जमीन को छूने लगे थे। गड़गड़ाहट से उपजे कंपन ने सभी को खामोश कर दिया था।

होटल हॉलिडे इन की भव्यता शिखा को आकर्षित कर रही थी। सिद्धार्थ उदासीन था। रिसेप्शन पर औपचारिकता पूरी कर वे तीनों पाँचवी मंजिल पर पहुँचे।

“वाह ! कमरा तो बहुत बढ़िया है” कॉजल ने कमरे का मुआयना करते हुए कहा।

“मेरा कमरा दूसरी ओर कोने में है, आप लोग फ्रेश हो जाइए फिर लंच लेकर कूज पर चलना है।”

“थोड़ा आराम कर लेते --- फ्लाइट भी लेट थी ---”

“आराम के लिए रात पड़ी है ममा ---”

“शिखा सिद्धार्थ ठीक कह रहा है।”

सिद्धार्थ के जाते ही शिखा बिफर पड़ी “क्या ठीक कह रहा है ? क्या हम यहाँ घूमने आए हैं? मास्को में बड़ी कम्पनी की नौकरी, घर परिवार, सब छोड़कर मेरे पास बनारस में आ गया। मैं भी रिटायर --- सिद्धार्थ के पिता को गुजरे कई साल हो गए -- वैसे भी उनका प्राइवेट जॉब था --- कोई पेंशन नहीं। सारा दिन मठों और घाटों में घूमता रहता है। नीलिमा के लिए परेशान रहता है या और कुछ, पता नहीं ? क्या हुआ उन दोनों के बीच? चला क्यों आया ?”

“इसीलिए हम लोग यहाँ आए हैं। तुम चिंता मत करो शिखा। सब ठीक हो जायेगा। हम नीलिमा को साथ ले चलेंगे --- यदि सिद्धार्थ यहाँ रहना चाहेगा तो वह भी ठीक है --- घर है ही, क्वालिफाइड है, नौकरी फिर मिल जायेगी।”

“तुमने मदद न की होती कॉजल तो हम न आ पाते --- सिद्धार्थ को भी तुमने ही मनाया -- ”

“मुझे भी मास्को देखना था। सिद्धार्थ प्रतिभावान है, संगीत में भी वह बड़ा नाम कर सकता है -- कबीर का वह दीवाना है, सूफी गायन में भी उसकी गति है, आजकल सूफी संगीत का क्रेज है -- लेकिन उसका उदास चेहरा मुझसे देखा नहीं जाता। कुछ करना है तो तनाव मुक्त होना होगा। यहाँ आते ही वह खुश दिख रहा है -- बच्चों सा चहक रहा है -- मुझे लग रहा है सब ठीक हो जायेगा, तो चलो तैयार होते हैं। पहले मैं नहाने जा रही हूँ।”

“ठीक है, मैं थोड़ा आराम कर लूँ।” शिखा ने बेड कवर हटाते हुए कहा।

जून का महीना गर्मी बनारस से कम थी लेकिन दोपहर की धूप में चुभन थी। मस्कवा नदी के दोनों छोर पर बहुमंजिली भव्य इमारतें थीं। हवाई अड्डे से आते समय भी वे इमारतें दिखाई दे रही थीं। कुछ पर झंडे टँगे थे जो सरकारी विभाग होने का संकेत दे रहे थे। नदी का बहाव तेज था, कहीं घाट नहीं दिखाई दे रहा था। कूज पर सवार होने के लिये पट्टे रखे थे, कूज के कर्मचारी हाथ थाम कर कूज में प्रवेश करने के लिये लोगों की सहायता कर रहे थे। कुछ दृश्य पूरे विश्व में एक जैसे होते हैं, महिलाओं का वैसे ही रुकना, घबड़ाना और फिर पूरे उत्साह से खिलखिलाते हुए सभी को भयमुक्त कर देना।

शिखा अब सहज सामान्य थी। कूज में यात्रा कर रहे एक रूसी परिवार की दो नन्ही बच्चियों के साथ वह घुल – मिल गई थी।

कॉजल कुछ गुनगुना रही थी। सिद्धार्थ ने कॉजल के साथ सुर मिलाया। लाइट हाउस के ऊपर परीनुमा औरत के शिल्प ने कॉजल को आकर्षित किया। कॉजल के संकेत पर सिद्धार्थ की दृष्टि घूमी। जब तक आकृति दृष्टि से ओझल न हुई दोनों मंत्रमुग्ध निहारते रहे।

“कितनी सुंदर थी -- ” कॉजल के मुँह से अनायास ही निकाल गया।

“कल्पना थी -- कल्पना सुंदर होती है -- वास्तविकता के आघात उसे कुरूप कर देते हैं।” सिद्धार्थ ने अपने विचार व्यक्त किए।

“वह शिल्प है -- साकार -- सुंदर -- ” कॉजल ने जोर देकर कहा।

“शिल्पकार की कल्पना है -- केवल कल्पना -- ” सिद्धार्थ उदासीन था।

“तुम्हारी भी तो कोई कल्पना थी सिद्धार्थ -- क्या तुम्हारी कल्पनाओं को नीलिमा साकार न कर सकी ? तुम्हें लौटना क्यों पड़ा -- आखिर कुछ तो हुआ होगा तुम दोनों के बीच ? मैंने कभी पूछा नहीं -- लेकिन अब हम यहाँ आ पहुँचे हैं तो जानना जरूरी है।”

“मैं नीलिमा को समझ नहीं पाया। दो साल हम अजनबियों की तरह साथ रहे -- हमारा जीवन आम भारतीयों जैसा ही था। हम एक दूसरे के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानने की कोशिश करते थे। पार्टियों में हम एक-दूसरे के और भी करीब होने का नाटक करते थे। शरीर साझा करना भी रूटीन जैसा था। नीलिमा के लिए बहुत परेशानी से भरा। अक्सर मैं स्वयं को अपराधी महसूस करता। नीलिमा का रुख कभी पॉज़िटिव नहीं रहा -- मैं उसे छूने में घबराने लगा। उसका व्यवहार सामान्य नहीं था। अन्य बातों में वह दूसरी औरतों की तरह ही थी, बहुत पजेसिव। मेरे चारों ओर कौन लोग हैं, विशेष तौर पर औरतें -- वह जानना चाहती थी। वैसे वह कहती थी मुझे इससे फर्क नहीं पड़ता, लेकिन जो फर्क पड़ता -- मैं जानता हूँ। मैं तुम्हें बोर तो नहीं कर रहा ?

“नहीं -- कहते रहो -- रुको नहीं प्लीज -- ” कॉजल ने उत्सुकता दिखाई।

सिद्धार्थ ने बात बढ़ाते हुए कहा “जल्दी ही मैं ऊबने लगा। पापा की डेथ के बाद ममा अकेली थीं। रिटायरमेंट के बाद और भी अकेली हो गईं। नीलिमा उनके साथ रहने को तैयार नहीं थी। उसे प्राइवैसी पसंद है। मास्को मुझे पसंद है लेकिन वह बनारस नहीं आना चाहती और मेरी पहली पसंद बनारस है। मुझे लगने लगा था

मेरे स्पर्श नीलिमा तक नहीं पहुँचते। न ही मेरे चुम्बन उसे मादकता से सराबोर करते हैं -- और -- और वह मुझे बहुत ईमेच्योर लगती है।”

सिद्धार्थ ने गहरी दृष्टि काँजल के चेहरे पर गड़ा दी “तुम्हीं बताओ काँजल, फिर मेरा उसके साथ बने रहने का क्या अर्थ था ? जिस घर का ताना – बाना लेकर हम और नीलिमा मास्को आये थे, वह तो बना नहीं। हम प्रेम पाने, प्रेम को अंकुरित होते -- प्रेम को खिलते देखना चाहते थे लेकिन इसके उलट हिंसक उग्र डैने हमें चारों ओर से घेरने लगे थे। हम दोनों एक दूसरे पर चीखते और कभी-कभी हमारे गुस्से का शिकार घर के बर्तन भी हो जाते। मैं घुटन महसूस कर रहा था। हर क्षण स्वयं को हिंसा से भरा हुआ महसूस कर रहा था। हर चीज से -- अपने मैकेनिकल जॉब से भी -- मैं मशीन नहीं हूँ -- कोई मुझे बरते और मेरी रूह तक मुझे खोखला कर दे। मेरी संगीत की दुनिया मुझे बुलाने लगी थी -- आवाज दे रही थी -- लेकिन यह भी सच है कि नीलिमा को मैं प्यार करता हूँ।”

काँजल ने टोका, “तुम जब बनारस में होते हो मास्को के लिए बेचैन होते हो -- और जब मास्को में रहोगे बनारस याद आयेगा -- लेकिन मास्को या बनारस ?”

“बात मास्को या बनारस की नहीं है --” सिद्धार्थ ने संजीदगी से कहा।

“तो फिर ?” काँजल ने प्रश्न किया।

“मैंने निर्णय समय पर छोड़ दिया है --”

“हाँ -- यही समझदारी है -- मैंने सुना है कॉलेज के दिनों में तुमने म्यूजिक कॉलेज ज्वाइन किया था ?”

काँजल ने बात का रुख मोड़ दिया।

“हाँ, बी. एच. यू. में म्यूजिक कॉलेज ज्वाइन किया था -- इंजीनियरिंग की पढ़ाई के कारण एक साल ही सीख पाया फिर छोड़ना पड़ा -- आई. टी. ऑर्केस्ट्रा का हमारा ग्रुप था। मैं गिटार बजाता था और गाता भी था।”

“कुछ राग तो सीखे ही होंगे?” काँजल ने मुस्कुराते हुए पूछा।

“हाँ! यमन, आसावरी, भैरवी, अब आगे मत पूछना, आरोह, अवरोह, पकड़ -- सब भूल चुका हूँ।”

“डोंट वरी, नहीं पूछूँगी --” दोनों खिलखिला पड़े।

“गोर्की पार्क -- नदी के किनारे बड़े अक्षरों में लिखे नाम को काँजल ने दोहराया “यह पार्क तो आगे बढ़ता ही जा रहा है -- खतम कहाँ होगा ?”

“यह देश अपने साहित्यकारों का सम्मान करना जानता है। सोवियत साहित्य अपने देश के निर्माण हेतु मजबूत खम्भे की तरह है।” सिद्धार्थ का स्वर गम्भीर था।

“सोवियत साहित्य में ऐसा क्या खास है ?” काँजल की उत्सुकता जाग उठी।

“सोवियत साहित्य के पूर्व ऐसा कोई साहित्य न था जिसने शोषण के विरुद्ध संघर्ष के लिए मजदूरी दासता का जुआ उतार फेंकने के लिये तमाम श्रमिकों और दलितों को संगठित किया हो -- स्त्रियों के अधिकारों की समानता की रक्षा के लिये आगे आया हो -- कल हम लोग लेनिन पार्क देखने जायेंगे -- वहाँ जाकर तुम रूस को कुछ ज्यादा समझ पाओगी --”

“नहीं कल हम नीलिमा से मिलने जायेंगे” शिखा ने सामने आकर तेजी से सिद्धार्थ की बात को काटा।

काँजल ने बात को सँभालते हुए कहा, “रूसी परिवार के साथ तुम काफी घुल मिल गई थी -- उनकी बच्चियाँ बड़ी प्यारी हैं।”

“हाँ! यहाँ के परिवार भी बिलकुल हमारे देश जैसे ही हैं, माँ-बाप दो बेटियाँ और साथ में बड़ी बूढ़ी दादी या नानी।” शिखा का स्वर सहज था।

“बुजुर्ग महिला दादी हैं?” क्या वे लोग अंग्रेजी समझ रहे थे?” कॉजल ने प्रश्न किया।

“नहीं, वह बच्चियों की नानी हैं। बच्चियों की माँ अंग्रेजी जानती है और सब थोड़ा बहुत समझ लेते हैं।”

“नानी कुछ समय के लिये आई होगी?” कॉजल ने प्रश्न किया।

“नहीं -- साथ ही रहती हैं -- बच्चों की देखभाल करती हैं --”

“ग्रेट -- ऐसा होता नहीं है --” सिद्धार्थ के स्वर में तल्खी थी। “अपने देश में भी जो हँसता मुसकुराता संसार दिखाई देता है -- उसके भीतर न जाने कितनी परतें होती हैं -- हाँ रिश्तों में भूख की भूमिका अहम होती है --”

“सिद्धार्थ! भूख से तुम्हारा क्या मतलब है?” कॉजल के स्वर में उत्तेजना थी।

“भूख सेल्फ डिफाइन है।” सिद्धार्थ ने लापरवाही से उत्तर दिया।

“बात खत्म करो, डेस्टिनेशन प्वाइंट आ गया है।” शिखा कूज की सीढ़ियों की ओर बढ़ने लगी।

रात गहरा गई थी। होटल के अन्दर का माहौल खुशनुमा था। डिनर के बाद तीनों लॉबी में आ बैठे।

“तो कल नीलिमा के पास चलना है न!” शिखा ने सिद्धार्थ से पूछा।

“नहीं -- कल नीलिमा नहीं मिल पायेगी -- मैंने कॉल किया था --”

“लेकिन यह तो पहले से तय था --”

“अचानक कुछ जरूरी काम आ गया होगा।”

“ऐसा भी क्या जरूरी है?”

“कुछ काम होगा -- हमें पोजिटिव सोचना चाहिये।” कॉजल ने अपनी बात रखी।

“तो फिर कल?” शिखा के स्वर में निराशा थी।

“हम सिद्धार्थ को फॉलो करेंगे।”

शिखा कमरे में लौटी तो बेचैनी उसके चेहरे पर साफ थी। “आखिर क्या हम यहाँ घूमने आए हैं -- सिद्धार्थ और नीलिमा की बातें कुछ समझ में नहीं आ रही हैं।”

“तुम्हें धैर्य रखना होगा शिखा -- सिद्धार्थ बच्चा नहीं है -- यदि लहरों का रुख नहीं समझा तो किनारे छूट सकते हैं -- हमें सिद्धार्थ का मूड समझना होगा। हमारे लिए भी मास्को की यात्रा नया अनुभव है, लेट्स एंजुवाय, आज कूज का सफर कितना सुहाना था।” उत्फुल्लता कॉजल के चेहरे पर झलक रही थी। उसका सुंदर, कमनीय मुख दमक उठा था।

लेनिन पार्क के भव्य द्वार से तीनों ने अन्दर प्रवेश किया। प्रवेश द्वार के ऊपर बनी मूर्तियों में किसानों के हाथ में गेहूँ की बालियाँ देखकर कॉजल ने कहा “पोशाक कोई हो --- किसान का वैभव उसके श्रम से उपजी गेहूँ की बालियाँ हैं।”

पार्क बहुत बड़ा था। लेनिन की ऊँची प्रतिमा के बगल में चलते हुए वे लोग बड़े गोलाकार फव्वारे के पास पहुँचे। फव्वारे के चारों ओर भीड़ थी। आदमकद सुन्दर नारी शिल्प सभी को आकर्षित कर रहे थे। तरह-तरह के फूलों ने छटा को मनोहर बना दिया था। शिखा थक कर फव्वारे के किनारे बैठ गई। सिद्धार्थ और कॉजल टहलते हुए एक इमारत के सामने आ खड़े हुए। किसानों की श्रम मुद्राएँ पूरी इमारत पर उकेरी गई थीं। स्वेद बिन्दुओं के टपकने से फैली आभा एक स्त्री के पूरे चेहरे पर फैली थी।

“क्या इस सौंदर्य से भी बढ़कर कोई रूप सौंदर्य हो सकता है?” कॉजल ठिठक कर बोल उठी।

वसुधा

“कॉजल - - मैं हर बार तुममें एक नई औरत देखता हूँ। संगीत पर सम्मोहित होने वाली आज श्रम सौंदर्य पर मुग्ध है! यह पार्क अपनी कहानी खुद बयाँ कर रहा है, श्रमिक जनों के पसीने से गढ़े हुए सौंदर्य की नई परिभाषा।”

“नई कहाँ? सौंदर्य सौंदर्य है, देखने पहचानने वाले की आँखें ढूँढ लेती हैं।”

“मेरी आँखें भी खोज रही हैं कॉजल - -”

“आदमी की तलाश जीवन पर्यंत समाप्त नहीं होती। यह तलाश, यह खोज जिजीविषा का ही अंग है - - आओ वापस चलें। शिखा प्रतीक्षा में होगी।” कॉजल का स्वर शांत था।

“तुम ममा के साथ गेट की ओर बढ़ो, मैं एक चक्कर लगा कर आता हूँ। यह मेरी फेवरिट जगह है।”

संग्रहालय के चक्कर काटता हुआ सिद्धार्थ बाहर गेट की ओर बढ़ा। बाहर निकलकर वह ठिठक गया। मजमा जुटा हुआ था। दो लड़कियाँ गिटार पर गाती हुई थिरक रही थीं। एक दूसरे में खोई हुई दोनों कभी पास आतीं, कभी गोलाकार घूमतीं हुई झूम-झूम कर नाच रही थीं। हवा में उड़ रहे थे दोनों के स्कार्फ। एक दूसरे के अदृश्य तारों को छेड़ती हवा की सिंफनी पर मुसकुराती हुई वे पैरों से ताल दे रही थीं। उनके प्राणों में बजता संगीत सभी को अनुप्राणित कर रहा था। सिद्धार्थ ने गिटार बजाती हुई नीलिमा को पहचान लिया था। वह दूर से ही इस प्रेमिल संगीत को सुन रहा था। नीलिमा का यह नया रूप उसे सम्मोहित कर रहा था। इस क्षण में व्यवधान डालना उसने उचित नहीं समझा। नीलिमा से मिलने की इच्छा तीव्र हो उठी।

नीलिमा की इच्छानुसार वह दूसरे दिन अकेले ही मोकाबा चर्च के पास नोवा अपार्टमेंट में पहुँचा। सातवें फ्लोर के अपने फ्लैट के सामने खड़े होकर उसने स्वयं को धरती और आकाश से कटा हुआ महसूस किया। वह सामान्य होने की कोशिश करने लगा। शिखा बहुत निराश थी। वह नीलिमा से मिलने ही आई थी लेकिन कॉजल ने स्थिति सँभाली। होटल से निकलते समय कॉजल ने सिद्धार्थ को ‘गुडलक’ कहा। सिद्धार्थ के होंठों पर फीकी मुस्कुराहट तैरी और बुझ गई।

घंटी बजते ही नीलिमा ने दरवाजा खोला। वह प्रतीक्षा कर रही थी। सिद्धार्थ ने आगे बढ़ कर नीलिमा के गालों का चुम्बन लिया। नीलिमा ने भी सिद्धार्थ के गालों को हल्के से छुआ। दोनों सोफे पर बैठ चुके थे।

“ममा तुमसे मिलना चाहती थीं।” सिद्धार्थ ने बात बढ़ाई। उसकी आँखें चमक रही थीं।

“कुछ लोगे चाय या कॉफी?”

“कॉफी बना लो।”

“तुम्हें तो ब्लैक कॉफी पसंद है - -”

“हाँ - - तुम्हें याद है - -”

“छः महीने में ही क्या भूल जाऊँगी?”

“ओह! तुम्हें यह भी याद है छः महीने - - इसका मतलब मुझे मिस करती रही हो - -”

“मैं कॉफी बना कर लाती हूँ - -”

“ओके - -”

सिद्धार्थ ने कमरे का मुआयना किया। कमरे की सजावट बदल चुकी थी। एक कोने में गिटार और कमरे के दूसरे सिरे पर म्यूजिक सिस्टम रखा था। मेज पर जहाँ सिद्धार्थ और नीलिमा का चित्र था, ठीक उसी जगह फ्रेम में नीलिमा के साथ एक लड़की थी। सिद्धार्थ ने पहचान लिया, यह वही लड़की थी जिसे सिद्धार्थ ने नीलिमा के साथ लेनिन पार्क के बाहर नाचते गाते देखा था। कमरे की दीवाल पर पर्दों के अलावा सजावट नहीं थी। नीलिमा को दीवारें कोरी ही अच्छी लगती हैं।

नीलिमा कॉफी लेकर आ गई थी।

कॉफी का प्याला थामते हुए सिद्धार्थ बोल उठा “ गिटार अच्छा बजाती हो - - ”

“ तुम्हें कैसे मालूम ? ”

“ कल पार्क में सुना था। ”

“ ओह - - तुम वहाँ थे ? ”

“ हाँ - - ”

“ मेरे साथ इरिना थी - - मैं तुम्हें इरिना के बारे में बताना चाहती हूँ - - ”

“ अच्छा नाचती है - - तुम दोनों की ट्यूनिंग अच्छी है - - ”

“हर तरह से सिद्धार्थ, हम दोनों रिश्ते में हैं।” नीलिमा का स्वर भावुक हो उठा। आँखें चमकने लगीं।

“ मतलब ? ” सिद्धार्थ ने चौंकते हुए प्रश्न किया।

“मतलब तुम समझ रहे हो, यह बात मैं अकेले में करना चाहती थी, तुम्हारी माँ नहीं समझ पातीं।”

“ समझ तो मैं भी नहीं पा रहा हूँ - - लेकिन समझने की कोशिश कर रहा हूँ। ”

दोनों के बीच सन्नाटा पसर गया। केवल कॉफी सिप करने की आवाजें आ रही थीं। नीलिमा ने बात आगे बढ़ाई। “जब मैं हॉस्टल में पढ़ रही थी तभी मेरी समझ में आने लगा था कि मैं लड़कियों की तरफ आकर्षित होती हूँ। उस समय मैं बी. ए. में थी। ‘सेक्स एजुकेशन’ का तो हमारे देश में रिवाज ही नहीं है। हमें एक दूसरे से अधिकचरे ज्ञान के अलावा और क्या हासिल होता है ? मेरी स्थिति तो असामान्य थी। जब लड़कियाँ लड़कों की स्मार्टनेस पर रीझ रही होती थीं मुझे अजीब-सा लगता था। सुंदर लड़कियों को बस देखते रहने का मन होता था। मैं भी एक लड़की की ओर आकर्षित थी। हमारे हॉस्टल एक ही कैम्पस में थे लेकिन अलग थे। किसी न किसी बहाने मैं उसे देखने रोज पहुँचती थी। उसी समय मेरे हॉस्टल में ही दो लड़कियों का समलैंगिकता में लिप्त होने के कारण रेस्ट्रिकेशन हुआ। भैया कही जाने वाली लड़की हमेशा पैट और टी. शर्ट पहनती थी। दूसरी लड़की बहुत ही नाजुक छुई-मुई-सी थी। वह शलवार कुर्ता और लॉन्ग स्कर्ट पहनती थी। यह पोशाकें उसकी सुंदरता को और भी बढ़ा देती थी। पहली लड़की उस पर हमेशा हावी रहती थी। नाजुक लड़की हमेशा सहमी सी रहती थी। किसी लड़की से उसकी दोस्ती नहीं थी। वह खुलकर बात नहीं करती थी। न खुलकर हँसती थी। उन दोनों को देखकर मेरे मन में एक ही प्रश्न उठता था एक लड़की पुरुष में क्यों बदलती जा रही है और दूसरी लड़की अपने व्यक्तित्व से क्यों कटती जा रही है ? फिर यह कैसा रिश्ता ? मैं अपने घर में माता-पिता के बीच भी ऐसा ही रिश्ता देखती थी। लेकिन यहाँ तो दो लड़कियाँ एक दूसरे के प्रति आकर्षित हैं। उन्हें महिलाओं की दुनिया रास आ रही है फिर पुरुष वर्चस्व भाव यहाँ कैसे प्रवेश कर गया ? शायद हमारे पारिवारिक रोल माडल्स ऐसे थे - - ऐसे हैं जहाँ से यह प्रभाव हमारे अवचेतन मस्तिष्क में आ जाता है। यह हमारी फिल्मों और साहित्य में भी दिखाई देता है। वैसे समलैंगिकता एक अलग स्थिति है साइको सोमैटिक - - हाँ हार्मोन्स का भी इसमें हाथ है - - लेकिन इसे तर्कों में परिभाषित नहीं किया जा सकता - - मैं तुम्हें बोर तो नहीं कर रही हूँ सिद्धार्थ - - ”

“ नहीं, यह सब जानना मेरे लिये जरूरी है - - तुम कहती रहो - - ”

“ ऐसे वातावरण में जहाँ समलैंगिकता को अपराध माना जाता हो - - मैं एक लड़की से कैसे कह सकती थी कि मैं उसे प्यार करती हूँ। मैं समाज से कहना चाहती थी - - हमें यहाँ से देखो जहाँ हम खड़े हैं - अपना चश्मा बदलो - - बदलो अपना नजरिया - - लेकिन क्या इसके लिये कोई तैयार होता - - घर में पापा का कठोर अनुशासन था। एम. ए. मैंने प्राइवेट किया फिर मेरी शादी तुमसे हुई। तुम मुझे समझदार लगे। लेकिन शारीरिक सम्बन्धों के बीच मैं संतुलन नहीं बैठा पाई। मुझे तुमसे पहले ही कहना चाहिए था लेकिन मैं अपने आमूलचूल परिवर्तन

की प्रतीक्षा करती रही। फिर एक दिन इरिना मेरी जिंदगी में आई। तुम नौकरी छोड़कर इंडिया जा चुके थे। तुमने कहा था कुछ दिन चेंज के लिये ममा से मिलने जा रहा हूँ लेकिन मैं तुम्हें समझ रही थी। तुम्हारी तरह मैं भी अकेली थी। इरिना ने मेरी जिंदगी में लय पैदा दी -- जीवन के अर्थ बदल दिये। उसने मेरी देह, मेरे मन को तरंगित किया। मैं प्राणवान हो उठी। सिद्धार्थ तुम मेरे मित्र हो। हम पति-पत्नी न भी रहें जीवन पर्यन्त मित्र तो रह सकते हैं। होप यू डोट मिसअंडरस्टैंड मी -- "

"तुम खुश हो तो ठीक है, मेरा क्या?"

"मुझे तुम्हारी चिंता रहेगी सिद्धार्थ -- "

"अच्छा नीलिमा -- चलता हूँ -- "

"हाँ -- पूछना भूल गई -- वहाँ बनारस में कुछ कर रहे हो?"

"कुछ नहीं -- बस कुछ तलाश रहा हूँ -- "

"मैंने भी वह टेलिकॉम कम्पनी छोड़ दी। पार्टटाइम जॉब करती हूँ और इरिना के साथ म्यूजिक आइडम्स करती हूँ -- इरिना इज मारवलस -- "

"चलता हूँ" सिद्धार्थ ने नीलिमा के कंधे को छुआ और बाहर आ गया।

सड़क पर आकार सिद्धार्थ ने नजर आकाश की ओर डाली। पाँव थरथराये। अगले ही क्षण जमीन पर पैरों की पकड़ मजबूत हो गई। कुहासे के पार उसे अपनी दिशा साफ दिखाई देने लगी। टैक्सी रोकी। टैक्सी में सवार हो सिद्धार्थ होटल की ओर बढ़ा।

शाम बीत रही थी। शिखा का धैर्य चुकने लगा था। रिशेप्शन के पास बैठी वह सिद्धार्थ की प्रतीक्षा कर रही थी। कॉजल उसे बाहर ले जाना चाहती थी लेकिन शिखा नहीं मानी, हारकर कॉजल अकेले ही शॉपिंग करने चली गई।

होटल में प्रवेश करते ही सिद्धार्थ को देखकर शिखा आगे बढ़ी। सिद्धार्थ ने माँ को बाहों में समेटा और कंधे पर हाथ रखे ही लिफ्ट की ओर बढ़ा। सिद्धार्थ को अपना पूरा संसार माँ में सिमटता दिखाई दे रहा था। माँ उसे मास्को की सबसे ऊँची इमारत पर उगे चाँद सी दिखाई दी। माँ की हथेलियों की गर्माहट ने उसके अंदर के तूफान को थाम लिया था। कमरे का लॉक खोल दोनों ने अन्दर प्रवेश किया। कुर्सी पर बैठते ही शिखा ने प्रश्न किया।

"क्या हुआ?"

"चाय बनाता हूँ -- तुम्हें तो अदरक वाली पसन्द है -- "

"जो मन हो सो बना -- पहले बता वहाँ क्या हुआ -- तेरे चेहरे से लग रहा है सब ठीक हो गया।"

"हाँ सब ठीक हुआ, मैं खुश हूँ, अब कोई डेलीमा नहीं है।"

"तू तो चाय बना रहा था, फिर यह कॉफी का पाउच -- "

सिद्धार्थ ने चौंकते हुए बात सँभाली, "अदरक तो यहाँ मिलेगी नहीं, तुम्हारे लिए मिल्क कॉफी -- "

शिखा ने बात काटते हुए कहा "तुम कह रहे हो दुविधा से बाहर आ गए हो। मुझे तो और भी कनफ्यूज्ड दिख रहे हो बेटा -- "

"हम सेपरेट हो गए ममा -- अब कोई दुविधा नहीं -- नीलिमा एक लड़की के साथ रिश्ते में है -- शी इज गे।"

"मतलब -- वह लेस्बियन है -- फिर तुमसे उसने शादी क्यों की?"

"अब इन बातों का क्या मतलब?" सिद्धार्थ ने प्याला बढ़ाते हुए कहा।

"मैं जानना चाहती हूँ सिद्धार्थ।" शिखा ने प्याला पकड़ते हुए ज़ोर देकर कहा।

वसुधा

सिद्धार्थ ने नीलिमा की कही बातों को दुहराया और अंत में यह कहते हुए अपनी बात समाप्त की " हमें अब नये सिरे से शुरुआत करनी होगी ममा ।"

सिद्धार्थ के चेहरे पर गहरी उदासी थी । शिखा ने ऑसुओं का वेग थामते हुए कॉफी का अंतिम घूँट खत्म किया ।

रात को बिस्तर पर दोनों खामोश थीं । कॉजल ने शिखा की बातों को सुना । शिखा की तरह उसके लिए भी यह पूरा प्रकरण अप्रत्याशित था । वह स्थिति की गम्भीरता को भाँप रही थी । अचानक शिखा तकिये के सहारे बैठ गई । उसने कॉजल की आँखों में अपनी दृष्टि गड़ा दी " सिद्धार्थ तुम्हें पसन्द करता है कॉजल -- मैं जानती हूँ तुम भी सिद्धार्थ को पसन्द करती हो --- तुम्हें आउट ऑफ द वे जाकर सिद्धार्थ को हैंडल करना होगा --- अब तुम ही उसे सँभाल सकती हो ।"

" मतलब ?" कॉजल ने असमंजस में प्रश्न किया ।

" मतलब तुम समझ रही हो -- "

" यह तुम कह रही हो शिखा -- मैंने तो ऐसा सोचा ही नहीं -- उसकी और मेरी उम्र -- "

" उम्र कोई मायने नहीं रखती -- जिंदगी बहुत बड़ी है -- जीवन का आकार बहुत विशाल है -- लेकिन जीने का ढंग ही जीवन को विराट बनाता है । इन कुछ दिनों में मैंने महसूस किया है तुम दोनों की तलाश एक है -- मैं सिद्धार्थ की माँ होने के नाते नहीं तुम्हारी मित्र होने के कारण कह रही हूँ -- तुम्हें हर बंधन तोड़ने होंगे -- लीक से हटकर ही तुम कुछ पा सकती हो -- ऐसा संगीत जो तुम दोनों को पूर्ण करेगा -- क्या तुम सिद्धार्थ से प्रेम नहीं करती हो ? "

कॉजल मौन थी । गहरे सन्नाटे के बीच रात बीत गई । सुबह कॉजल ने सिद्धार्थ के कमरे में प्रवेश किया । सिद्धार्थ के ' गुड मॉर्निंग ' का उत्तर देकर कॉजल ने बात बढ़ाई । " यहाँ फूल पौधे बहुत हैं लेकिन चिड़ियों की चहचहाहट नहीं सुनाई देती -- तुम्हें ऐसा नहीं लगता सिद्धार्थ -- "

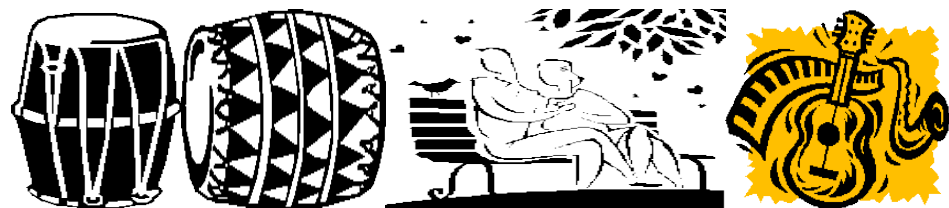
" पंछी तो अपने देश में भी विदेशी नस्ल के ज्यादा दिखाई देते हैं । ठंड में गंगा की लहरों से अठखेलियाँ करते हुए । "

" पंछी तो पंछी हैं -- अपनी जगह ढूँढ लेते हैं -- पहचान लेते हैं सूरज का संगीत -- भोर जगते ही सितारों के तार पर छिड़ जाती है जैसे राग भैरवी -- कॉजल गुनगुनाने लगी -- "

" यह क्षण यूँ ही अटल -- जादूगर बना रहे -- तुम कितनी सुन्दर -- कितनी मोहक हो -- " सिद्धार्थ ने मुग्ध दृष्टि से कॉजल को निहारते हुए कहा ।

" हम दोनों मिलकर संगीत में कुछ ऐसा रचेंगे सिद्धार्थ जो वास्तव में अटल होगा । लय, ताल, सुर का जादूगर, शिवत्व से परिपूर्ण आनन्द भरा संगीत -- हिरव्यमय एक नया राग -- " कॉजल ने सिद्धार्थ के हाथों को स्पर्श करते हुए कहा ।

सिद्धार्थ ने आगे बढ़ कर कॉजल को बाहों में समेट लिया । खट से दरवाजा खुलने और बंद होने की आवाज दोनों ने सुनी । शिखा ब्रेकफास्ट पर दोनों की प्रतीक्षा कर रही थी । शिखा के चेहरे पर आश्चर्य का भाव था ।



<p>स्नेह ठाकुर अनमोल हास्य क्षण</p>	<p>स्नेह ठाकुर जीवन कैसा कविताएँ</p>	<p>स्नेह ठाकुर की दर्द-जुबां हृदय विदारक कविताएँ</p>	<p>स्नेह ठाकुर आज का पुरुष</p>	<p>स्नेह ठाकुर जीवन-निधि (कविताएँ)</p>
<p>आत्म गुंजा</p>	<p>हास-परिहास (हास्य कविताएँ)</p>	<p>जन्मांतों का सिलसिला (कविताएँ)</p>	<p>The Galaxy Within.. An anthology of poems</p>	<p>अनुभूतियाँ</p>
<p>काव्य-वृष्टि</p>	<p>पूरव - पश्चिम स्नेह ठाकुर</p>	<p>बौछार</p>	<p>काव्य हीरक</p>	<p>संजीवनी रंग चित्रण एवं आवाज संघी परीक्षाओं की तैयारी</p>
<p>उपनिषद् दर्शन</p>	<p>काव्य-धारा</p>	<p>काव्यांजलि</p>	<p>अविस्था साथी</p>	<p>कैकेयी चेतना शिखा</p>
<p>आज का समाज</p>	<p>विन्तन के धागों में कैकेयी सदस्य : अन्तराष्ट्रीय साहित्य सम्मेलन</p>	<p>कैकेयी चेतना शिखा</p>	<p>कैकेयी सदस्य : प्रगतिशील साहित्यकारों का सम्मेलन</p>	<p>लोक-नायक राम उपन्यास</p>
<p>कैकेयी विन्तन के धागों में कैकेयी सदस्य : अन्तराष्ट्रीय साहित्य सम्मेलन</p>	<p>लोक-नायक राम उपन्यास</p>	<p>नाकंडा अम्माँ अध्यात्मिक जीवनी डॉ. स्नेह ठाकुर</p>	<p>श्रीरामप्रिया सौना (उपन्यास)</p>	<p>नाकंडा अम्माँ अध्यात्मिक जीवनी डॉ. स्नेह ठाकुर</p>
<p>नाकंडा अम्माँ अध्यात्मिक जीवनी डॉ. स्नेह ठाकुर</p>	<p>लोक-नायक राम उपन्यास</p>	<p>नाकंडा अम्माँ अध्यात्मिक जीवनी डॉ. स्नेह ठाकुर</p>	<p>कैकेयी चेतना शिखा</p>	<p>कैकेयी चेतना शिखा</p>





डॉ. स्नेह ठाकुर की प्रकाशित पुस्तकें

दशानन रावण	(उपन्यास)
लोक-नायक राम	(उपन्यास, चतुर्थ संस्करण)
कैकेयी : चेतना-शिखा	(उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र. अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, चतुर्थ संस्करण)
कैकेयी : चेतना-शिखा	(उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र. अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, तृतीय संस्करण)
नाकंडा अम्मा	(अध्यात्मिक जीवनी, चतुर्थ संस्करण)
लोक-नायक राम	(उपन्यास, तृतीय संस्करण)
नाकंडा अम्मा	(अध्यात्मिक जीवनी, तृतीय संस्करण)
नाकंडा अम्मा	(अध्यात्मिक जीवनी, द्वितीय संस्करण)
श्रीरामप्रिया सीता	(उपन्यास)
नाकंडा अम्मा	(अध्यात्मिक जीवनी)
लोक-नायक राम	(उपन्यास, द्वितीय संस्करण)
कैकेयी : चिन्तन के नव परिदृश्य - संदर्भ : अध्यात्मरामायण (शोध-ग्रन्थ)	(उपन्यास)
लोक-नायक राम	(उपन्यास)
कैकेयी : चिन्तन के नव आयाम - संदर्भ : तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस (शोध-ग्रन्थ)	(उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र. अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, द्वितीय संस्करण)
कैकेयी : चेतना-शिखा	(उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र. अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, द्वितीय संस्करण)
चिन्तन के धागों में कैकेयी - संदर्भ : श्रीमदवाल्मीकीय रामायण (शोध-ग्रन्थ)	(सामाजिक लेख-संग्रह)
आज का समाज	(उपन्यास, राष्ट्रपति भवन पुस्तकालय में संग्रहित)
कैकेयी : चेतना-शिखा	(कहानी-संग्रह)
अनोखा साथी	(काव्य-संग्रह)
काव्यांजलि	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
काव्य-धारा	(दार्शनिक एवं अध्यात्मिक)
उपनिषद दर्शन	(स्वास्थ्य सम्बन्धी आलेख)
संजीवनी	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
काव्य हीरक	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
बौछार	(आप्रवासी सम्बन्धित आलेख संग्रह)
पूरब-पश्चिम	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
काव्य-वृष्टि	(काव्य-संग्रह)
अनुभूतियाँ	(A collection of English poems)
The Galaxy Within	(काव्य-संग्रह)
ज़्ज़्वातों का सिलसिला	(हास्य कविताएँ)
हास-परिहास	(अध्यात्मिक-दार्शनिक गीत)
आत्म-गुंजन	(काव्य-संग्रह)
जीवन-निधि	(कहानी-संग्रह)
आज का पुरुष	(नज़्म व ग़ज़ल संग्रह)
दर्द-जुबाँ	(काव्य-संग्रह)
जीवन के रंग	(नाटक-संग्रह, फेडरल गवर्नमेन्ट, कैनेडा द्वारा अधिकतम अनुदान से सम्मानित)
अनमोल हास्य क्षण	

प्रकाशक व वितरक

स्टार पब्लिकेशन्स (प्रा.) लि.
४५ बी., आसफ अली रोड
नई दिल्ली - ११०००२, भारत
Star Publishers' Distributors

55, Warren Street

LONDON - W1T 5NW, England

दिल्ली प्रेस की सरिता व अन्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में भी रचनाएँ प्रकाशित